प्रकाशक— अणुव्रत महिला परिषद्
'शान्ति भवन'
६४, ए० एम० लेन,
बेंगलूर-२ A

●

नवम्बर १९६९
कार्तिक पूर्णिमा २०२६

●

संकलनकर्त्ता
अणुव्रत महिला परिषद्, बेंगलूर

●

मुद्रक— ज्ञानप्रकाश गुप्ता
राज प्रिंटर्स, राजामण्डी, आगरा-२

SRADHA KUSHUM

Anuvrat Mahila Parishad
Bangalore-2

मूल्य
दो रुपया पचास पैसे

अणुव्रत अनुशास्ता, श्रद्धास्पद

महामहिम आचार्य श्री तुलसी

का

प्रेरक संदेश

अणुव्रत के सामने अभी कई महत्त्वपूर्ण कार्य है। राष्ट्र के गिरते नैतिक स्तर को सभालना, नैतिकता का वातावरण बनाना, बढते हुए हिंसात्मक कार्यों के प्रतिरोध मे अहिसक शक्ति को सगठित करना आदि अनेक प्रवृत्तियो का अणुव्रत मच से सचालित होना आवश्यक है।

अणुव्रत ने राष्ट्रीय-चरित्र-निर्माण का दायित्व स्वय अपने पर लिया है, इसलिए देश की वर्तमान विषम परिस्थितियो मे उसका दायित्व और अधिक बढ जाता है।

इन कार्यक्रमो को आकार देने के लिए कार्यकर्त्ताओ मे शक्ति का होना जरूरी है। पुरुषो की तरह महिलाओ को भी इस क्षेत्र मे आगे आना होगा। मेरा विश्वास है, महिलाएँ यदि अगुआ होकर इस कार्य को सम्हालेंगी तो यह कार्य अधिक गतिशील बन सकेगा।

अणुव्रत महिला परिषद्, बेंगलोर जो कि अपना सम्मेलन बुला रही है और श्रद्धा के कुसुम भी प्रकाशित कर रही है। इस अवसर पर विशेष रूप से अपना कर्त्तव्य बोध पायेंगी।

समय को पहचानते हुए महिलाओ ने यदि बलिदान और उत्सर्ग का मार्ग अपनाया, तो मैं समझता हूँ, यह भविष्य के लिए महान् लाभदायी सिद्ध होगा।

—आचार्य तुलसी

कोटि-कोटि जनता के श्रद्धास्पद :

आचार्य श्री तुलसी

कलम की नोंक से

कहा गया है—श्रद्धास्पद तुलसी के विषय मे, और वही 'श्रद्धा-कुसुम' बन गया है—पद्य और गद्यमय द्रव्य भाषा के सहारे, किन्तु जो कहा गया, वह द्रव्य नही, सहज भाव है- श्रद्धालुओ के अपने श्रद्धा-केन्द्र के प्रति जिनसे ही उन्होने श्रद्धा प्राप्त की है। 'भाव श्रद्धा बन गई और शब्द कुसुम !' दोनो के सयोग से ही पूर्णत्व बनता है, आदान-प्रदान होता है श्रद्धा प्रकट हुई है शब्द-कुसुम के माध्यम से और शब्द-कुसुम का रग खिला है, पराग निखरा है, प्रकाश बिखरा है—भाव-श्रद्धा के माध्यम से - दोनो एक दूसरे के पूरक बने हैं।

'श्रद्धा-कुसुम' के रूप मे 'अणुव्रत महिला परिषद्' जो कुछ लाई है, वह भेंट नही, क्योकि यह श्रद्धा तो तुम्हारी अपनी ही दी हुई है। इसमे शब्दो के माध्यम जो कुछ गुम्फित हुआ, व्यक्त हुआ, वे अपने भाव नही, तुम्हारे ही हैं। उस श्रद्धा के साध्य और साधन दोनो तुम स्वय ही हो, स्वय मार्ग बनें और मजिल भी। कुसुम का पराग-दीप का प्रकाश, चित्र की सुन्दरता, शरीर की शक्ति, मन की श्रद्धा, सब कुछ तुम ही तो हो।

श्रद्धास्पद !
तुम फूल नही,
उसके पराग,
तुम चित्र नही
तुम हो चिराग,
धरती के हो महापूत
तुम महाभाग !

तुम्ही से प्राप्त पराग, प्रकाश, सुन्दरता, शक्ति और श्रद्धा ही यह श्रद्धा-कुसुम है—इसे स्वीकारें।

श्रद्धा की यह सुमन भेंट,
नही, फूलो का गुम्फितहार।

आर्य ! तुम निर्मित श्रद्धा ही,
स्वीकारो 'श्रद्धा-कुसुम' सुहार

×

×

जो कुछ कहा,
जिसने भी कहा,
प्रेरित हो तव श्रद्धा से
क्या खूब कहा ?
सब ठीक कहा ।

—मनोहर छाजेर 'भारतीय'

'साहित्य-सौरभ'
१४, प्रथम मार्ग, नेहरू नगर
बेंगलूर

अनुक्रमणिका

●

श्र
द्धा
कु
सु
म

श्रद्धा की यह सुमन भेट,
नही, फूलो का गुम्फित हार।
आर्य ! तुम निर्मित श्रद्धा ही,
स्वीकारो, 'श्रद्धा-कुसुम' सुहार।

• अणुव्रत महिला परिषद् •

बहनों के प्रति

—आचार्य श्री तुलसी

भरदो जीवन मे ऐसे सस्कार बहनो !
ज्यो हो मानव-समाज का उद्धार बहनो !
जिससे जाग्रत हो, सोया ससार बहनो !
भरदो जीवन मे ऐसे सस्कार बहनो !

—०—

देखा जाता है सस्कार माता का ।
काम करता है भाग्य-विधाता का ॥
जागे बच्चो मे ऊँचे विचार बहनो !
भरदो जीवन मे ऐसे सस्कार बहनो !!

तुममे श्रद्धा प्रगाढ, सच्चे ज्ञान की कमी ।
कोमलता है पर आत्मबल के भान की कमी ॥
उतरे मन की कमजोरियो का भार बहनो !
भरदो जीवन मे ऐसे सस्कार बहनो !!

धर्म केवल उपासना का तत्व ना रहे ।
धारा उसकी स्वय के व्यवहार मे बहे ॥
हो कुरूढियो पर सीधा प्रहार बहनो !
भरदो जीवन मे ऐसे सस्कार बहनो !!

रात दिन के कदाग्रह की भावना मिटे ।
प्रेम धीरज से ही क्लेश सारा कटे ॥
जिससे घर मे हो स्वर्ग की बहार बहनो !
भरदो जीवन में ऐसे सस्कार बहनो !!

कैसी फैशन, प्रदर्शनो की है लालसा ।
सोचती हो नही, अपने घर की दशा ॥
सादगी हो, सग्रह का प्रतिकार बहनो ।
भरदो जीवन में ऐसे सस्कार बहनो !!

अपने गौरव को भूलो न सन्नारियो ।
झूठे वैभव पर फूलो न सन्नारियो ॥
शील, सयम ही सच्चा शृगार बहनो ।
भरदो जीवन मे ऐसे सस्कार बहनो !!

ईर्ष्या, मत्सर, आक्षेपो से रहना परे ।
सत्य जीवन मे 'तुलसी' सदैव निखरे ॥
ज्यो हो अणुव्रत की साधना-साकार बहनो !
भरदो जीवन मे ऐसे सस्कार बहनो !!

तर्ज—अणुव्रत का ऐलान

मेरा कोई भाई गोहत्या पर उतारू हो जाय तब मुझे क्या करना चाहिए ? मैं उसे मार डालू या उसके पैर पकड कर उससे ऐसा न करने की प्रार्थना करू ? अगर आप कहे कि मुझे पिछला तरीका अख्तियार करना चाहिए, तो फिर अपने मुसलमान भाई के साथ भी मुझे इसी तरह पेश आना चाहिए ।

—महात्मा गाधी (हिन्द स्वराज्य, पृष्ठ ६६)

विघन हरण

—श्री मज्जयाचार्य

भिक्षु भारीमाल ऋषिरायजी, खेतसी जी सुखकारी हो,
हेम हजारी आदि दे, सकल सन्त-सुविचारी हो।
प्रणमूं हर्ष अपारी हो, अ० भी० रा० शि०को० उदारी हो,
धर्मसूर्ति धुनधारी हो, विघनहरण वृद्धिकारी हो।
सुख सपति सिरदारी हो, भजो मुनि गुणाँ रा भंडारी हो ॥१॥

दीपगणी दीपक जिसा, जय जशकरण उदारी हो,
धर्म प्रभावक महाधुनी, ज्ञान गुणा रा भण्डारी हो।
नित प्रणमो नर नारी हो ॥ भजो मुनि० ॥ २ ॥

सखर सुधारस सारसी, वाणी सरस विशाली हो,
शीतल चन्द सुहावणा, निमल विमल गुण न्हाली हो।
अमीचन्द अघ टाली हो ॥ भजो मुनि० ॥ ३

उष्ण-शीत वर्षा ऋतु समें, वर करणी विस्तारी हो,
तप जप कर तन तावियो, ध्यान अभिग्रह धारी हो।
सुणता इचरजकारी हो ॥ भजो मुनि० ॥

सन्त धन्नो आगे सुण्या, ए प्रगट्यो इण आरी हो,
प्रत्यक्ष उद्योत किंयो भलो, जाणे जिन जयकारी हो।
ज्यारी हूँ बलिहारी हो ॥ भजो मुनि०

चोरी जिन-शासन धुरा, अहो निशि मे अधिकारी हो,
परम दृष्टि मैं परखियो, जबर विचारणा थारी हो
सुजश दिशा अनुसारी हो, प्रगट्यो ऋषि तू
॥ भजो मु०

वृद्ध सहोदर जीतनो, जगधारी उपकारी हो
लघु-सहोदर सरूप नो, भीम गुणा रा भण्डारी
सरवर सुजश ससारी हो ॥ भजो

समरण थी सुख सपजें, जाप जप्या जश भारी हो,
मनवछित मनोरथ फलै, भजन करो नर नारी हो।
वारू बुद्धि विस्तारी हो ॥ भजो मुनि० ॥ ८ ॥

रामसुख रलियामणो, तेसठ उदक आगारी हो,
अडसठ ने पैंतालीस भला, वलि उगणीस चौविहारी हो,
बड तपसी तपधारी हो ॥ भजो मुनि० ॥ ९ ॥

मन दृढ वच दृढ महामुनि, शील दृढ सुविचारी हो,
परम विनीत पिछाणियो, सरधा दृढ सुधारी हो ।
समरण सुखदातारी हो ॥ भजो मुनि० ॥ १० ॥

शिव वासी लावा तणो, तप गुण राशि उदारी हो,
आसासी-निज आतमा, षटमासी लग धारी हो।
शीतकाल मझारी हो, सह्यो शीत अपारी हो॥
॥ भजो मुनि० ॥ ११ ॥

उष्ण शिला तथा रेतनी, आतापना अधिकारी हो,
तप वर चौमासा तणो, सुणता इचरजकारी हो।
गुण निष्पन्न नाम भारी हो॥ भजो मुनि० ॥ १२ ॥

कोदर तप करडो किया, पटमासी लगधारी हो,
व्यावचियो मुनि वालहो, छठ छठ अठम उदारी हो।
जावजीव जयकारी हो ॥ भजो मुनि० ॥ १३ ॥

शीत उष्ण बहु तप कियो सुगुरु थकी इकतारी हो,
परम प्रीत पाली मुनि, जाझी कीरत थारी हो।
समरण सुखदातारी हो ॥ भजो मुनि० ॥ १४ ॥

विघ्न मिटै अरिगण हटै, प्रगटै सुख भारी हो,
दलरूप दोहग दालिद्र दटै, नाम रटै नर नारी हो।
एहवो भजन उदारी हो ॥ भजो मुनि० ॥ १५ ॥

कर्म निर्जरा कारणे, जाप जपो नर नारी हो,
निरवद्य कारज निरमलो, शिव सुख नो सहचारी हो।
सावद्य आणा वारी हो ॥ भजो मुनि० ॥ १६ ॥

भीम अमीचन्द मुनि भला, कोदर शिव वृद्धिकारी हो,
रामसुख रलियामणो, श्रमण पञ्च सिरदारी हो।
जाप परम जशधारी हो ॥ भजो मुनि० ॥ १७ ॥

शिव मङ्गल सुख साहिबी, सम्पति समय सुधारी हो,
अधिक आनन्द सुजश भलो, होवे हर्ष अपारी हो।
एहवो भजन उदारी हो ॥ भजो मुनि० ॥ १८ ॥

उदधि अगन अरि विप तणो, सकल विघन परिहारी हो,
सत्य शील प्रभाव जिन कह्यो, तिमहिज भजन तंत सारी हो।
परम मन्त्रसम धारी हो ॥ भजो मुनि० ॥ १९ ॥

तस्कर त्रास न पराभवै, चर्चा मे जयकारी हो,
भूत रोग आपद हरै, अघ दल रूप परिहारी हो।
समरण महासुखकारी हो ॥ भजो मुनि० ॥ २० ॥

चन्दपन्नति सूत्र नी, गाथा द्वितीय विचारी हो,
तिमहिज भजन ए ऋषि तणो, अधिष्ठायक अधिकारी हो।
थिर दृढ आसता धारी हो ॥ भजो मुनि० ॥ २१ ॥

दवदन्ती सूरि दीपती, जयवन्ती जशधारी हो,
इन्द्राण्या सूरि आदि दे, साज करण सुखकारी हो।
पुण्यवन्ती प्यारी हो ॥ भजो मुनि० ॥ २२ ॥

गुणठाणे चौथे गुणी, श्रमण सत्या हितकारी हो,
अ० सि० आ० उ० सा० ने सदा, प्रणमे बारम्बारी हो।
आणी हर्ष अपारी हो ॥ भजो मुनि० ॥ २३ ॥

श्री जिन-शासन शोभतो, अधिष्ठायक अधिकारी हो,
अहो निशि अवधि पर भू ज्ञता, वाञ्छित पूरण हारी हो।
सुख सम्पति सहचारी हो ॥ भजो मुनि० ॥ २४ ॥

सिणगाराजी मोटो सती, हरखूजी हितकारी हो,
मातो तास सुहामणी, अणसण चरण उदारी हो।
आराध्यो इकतारी ॥ भजो मुनि ॥ २५ ॥

हिम्मतवान सती हु'ती, व्यावच करण विचारी हो,
विघन हरण वच्छलकारणी, दिल सम्पत दातारी हो।
जयजश हरष अपारी हो ॥ भजो मुनि० ॥ २६ ॥

जाण तिके नर जाणता, अवर न जाणे लिगारी हो,
धर्म उद्योत करण धुरा, निर्वंद्य कारज सारी हो।
आणा तास मझारी हो ॥ भजो मुनि० ॥ २७ ॥

परम प्रीत सतगुरु थकी, विरुद वहे इकतारी हो,
पूरण आसता ताहरी, म्हारा मन मझारी हो।
जबर दिशा जयकारी हो ॥ भजो मुनि० ॥ २८ ॥

अधिक विनय गुण आगलो, थिर दृढ आसता धारी हो,
तसु मिटवा जोग उपद्रव मिटै, ते अघदल रूप परिहारी हो।
निश्चय री वात न्यारी हो, न टलै होणहारी हो ॥
॥ भजो मुनि० ॥ २९ ॥

उगणी सै तेरह समै, बसन्त पञ्चमी सोमवारी हो,
पञ्च ऋषि नो परवडो, स्तवन रच्यौ तत्तसारी हो।
प्रसिद्ध शहर सिरीयारी हो, गणपति जयजशकारी हो ॥
॥ भजो मुनि० ॥ ३० ॥

विघन-हरण री स्थापना, भिक्षु नगर मझारी हो,
महासुदी चवदस पुष्य दिने, कीधी, हर्ष अपारी हो।
तास शिष्य वचधारी हो, तीरथ चार मझारी हो,
ठाणा एकाणु तिवारी हो ॥ भजो मुनि० ॥ ३१ ॥

तर्ज—सो ही तेरापथ पावे हो

अमर इतिहास बनाए जाते हो

—मुनि श्री चन्दनमल जी
(साहित्य निकाय व्यवस्थापक)

ओ तुलसी ! तुम एक अमर इतिहास बनाए जाते हो ।
प्रेम-ऐक्य नैतिकता का विश्वास बढाए जाते हो ॥

तुमको सब लगते अपने, सबको तुम अपने लगते हो ।
हुए जगाते जग को, ओ प्रहरी ! तुम प्रतिपल जगते हो ॥
वर्ण, जाति, भाषा, धर्मों का भेद न तुम्हे सताता है ।
गुणानुलक्ष्यी लक्ष्य तुम्हारा, सबमे हिलमिल जाता है ॥
जैनाचार्य, नोन जैनो को भी अपनाए जाते हो ॥ १ ॥ ओ तुलसी० ॥

है अचरज क्यो पास तुम्हारे, दुनिया दौडी आती है ?
हो तुम स्पष्ट अकिंचन फिर भी पता नही क्या पाती है ?
अजब-गजब के जादूगर ! सीधी-सी बात बताते हो ।
फिर भी औरो के मन पर, अपना अस्तित्व जमाते हो ॥
अणु-अणु मे अणुव्रत की सौरभ तुम महकाए जाते हो ॥२॥ ओ तुलसी०॥

कही-कही चर्चों मे भव्य तुम्हारा स्वागत होता है ।
वीर और ईशू के चिन्तन का अन्वागत होता है ॥
मुल्ला और मौलवी भी पैगम्बर रूप तुम्हे देते ।
हिन्दू-मुस्लिम भेद भुलाकर, दुआ तुम्हारी हैं लेते ॥
मानव-मानव एक यही, आवाज उठाए जाते हो ॥३॥ ओ तुलसी० ॥

वेदो के मन्त्रो से पण्डित कही आरती करते है ।
कही भक्तगण फूल और फल लाकर आगे धरते हैं ॥
हिन्दी के प्रतिपक्षी भी हिन्दी तुमसे बुलवाते हैं ।
तमिल और कन्नड के भाषी तुमको सुनना चाहते है ॥
उत्तर-दक्षिण को तुम दिल से एक मिलाए जाते हो ॥४॥ ओ तुलसी० ॥

अविरल यात्रा केरल की भी सभी तरह सुखकार रही।
मिला सुखद सहयोग सभी का, प्रश्नो की भरमार रही॥
करते हुए अदा ड्यूटी को, अब ऊटी पर आए हो।
करके सहन घोर आतप, अब शान्त-प्रान्त को पाए हो॥
द्वन्द्वो मे अविचल 'चन्दन' तुम कदम टिकाए जाते हो।
ओ तुलसी ! तुम एक अमर इतिहास बनाए जाते हो॥५॥

तर्ज—कहनी है एक बात मुझे ....
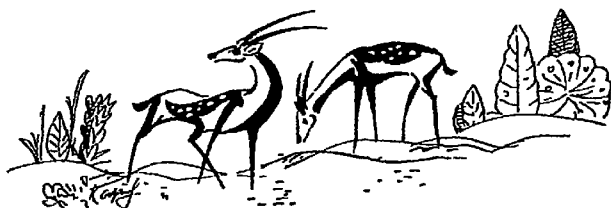
जब हम लोग मानव-बन्धुत्व की बात करते हैं तो वही रुक जाते है, और हम लोगो के मन मे आता है कि बाकी के सर्व जीव मनुष्य के अपने भोगोपभोग के लिए सर्जित हैं, परन्तु हिन्दू-धर्म मे भोगोपभोगमात्र का विचार त्याज्य माना गया है। जीवमात्र के साथ इस एकता को साधने के लिए, मनुष्य जितना त्याग करता है, उतना ही कम होता है, परन्तु इस आदर्श की विशालता से मनुष्य की हाजतो पर अकुश होता ही है।

—महात्मा गाधी

(धर्म नो प्राण—व्यापक धर्म भावना, पृष्ठ ६६

सचमुच समाज आज अस्वस्थ है, रूढियाँ एव अधविश्वासो की बीमारी से घिरा है, गल रहा है। उसकी चिकित्सा करने के लिए अब बहिनो को चिकित्सक बनना होगा

यदि समाज को स्वस्थ करना है, तो बहिनें चिकित्सक बनें

—सेवाभावी मुनिश्री चम्पालालजी

सामाजिक व्यवस्था परपराओ का पु ज है । विना परपरा के व्यवस्था नही चलती । जब जब आवश्यकता हुई, नई नई परपराए समाज मे प्रचलित हुई , विकिसत हुई । धीरे धीरे ज्यो ज्यो उनकी आवश्यकतायें पूरी, हुई वे ही परपराए रूढ बन गई । न्याय से उन्हे विसर्जित कर देना चाहिए था ? पर कौन करे ? रूढ परम्परा जब समाज मे अपना अधिक जमाव कर लेती है, क्रमश समाज जडता मे जकड जाता है । उन्हे छोडा भी नही जाता, और निभाना भी कठिन पडता है । छोडा इसलिए नही जाता क्योकि वे पहले से चली आती हैं । व्यक्ति का मन उनसे चिपका रहता है । और निभाया इसलिए नही जाता क्योकि वे बोझिल है और अनावश्यक हैं। ऐसी परम्पराओ को समाज हटाना तो चाहता है, पर चाहने हुए भी आगे आने की हिम्मत नही होती ।

आदमी खाना खाता है, देश काल के अनुरूप वह उसमे परिवर्तन भी करता है । जब वह देखता है, मौसम गर्मी का है तो वह शीत प्रयोग करता है, और जब उसे उष्मा की आवश्यकता होती है, वह वैसे उपक्रम जुटाता है । कभी-कभी व्यक्ति स्वादेन्द्रिय का सवरण न कर पाने के कारण अनावश्यक पदार्थों को भी काम मे लिये चलता है । जब तक शारीरिक क्षमता सबल होती है, उन अनावश्यक खाये हुये पदार्थों का उसपर कोई विशेष असर नही होता, ऐसा लगता है । धीरे धीरे आतो मे जमाव होने लगता है । उसकी ग्रहणक्रिया,

पाचनक्रिया और विसर्जनक्रिया प्रभावित होने लगती है। वह अपने आपको अस्वस्थ महसूस करते हुये भी औरो के सामने कहते सकुचाता है। न कहे, पर अन्त मे उसे चिकित्सक की शरण लेनी ही पडती है। वहाँ भी वह यह सिद्ध करने की कोशिश करता है, मेरा खाद्य ठीक है, सीमित है, यह गड बड किसी और कारण से हुई है। सिद्ध चिकित्सक उसे देखेगा, परखेगा और सबसे पहले उसकी विसर्जन क्रिया सुधारेगा। कितनी भी अच्छी दवा दी जाये, जब तक आतो का भीतरी जमाव नही हट जाता, दवा कारागर नही हो सकती। अनुभवी चिकित्सक को पहले पहल रोगी का पेट साफ करना ही होगा। पेट साफ होते ही रोगी आधा स्वस्थ हो जायगा, वह हलकापन महसूस करेगा। भूख खुल जायेगी, सारी क्रियाएँ नियमित काम करने लगेगी।

यही हाल समाज का है, आतो मे जमा हुआ रूढ परम्पराओ का मलावरोध जब तक हट नही जाता, समाज स्वस्थ नही हो सकता। भले उसे कितनी ही उत्तमोत्तम रासायनिक औषधियाँ दे दी जाये, वह स्वस्थ नही हो सकता। प्रगति नही कर सकता। ज्यो ही वह आगे बढने की कोशिश करता है रूढिया उसे फिर से पीछे की ओर ढकेलती हैं। आज जरूरत है उस सिद्ध चिकित्सक की, जो पहले पहल पेट साफ करे। रोगी तो कहेगा मेरी गडबड खाने से नही है वैद्यजी! किसी और कारण से है। क्योकि व्यक्ति अपनी कमजोरी प्रगट होने देना नही चाहता। समाज भी कहेगा, मेरी परम्परा ठीक है, समाज का पतन किसी और कारण से है। पर वैद्य के हाथ मे नाड़ी होती है। आदमी भले न बोले पर नाडी जो बोल रही है। समाज की अस्वस्थताओ का मूल ये रूढिया है। जिन्हे समाज समझता हुआ भी घसीटे जा रहा है। शान मान कर जिन्हे समाज निभाए जा रहा है। निभाये क्या जा रहा है? कहना तो यो चाहिए, शान के बहाने घसीटना पड रहा है। सचमुच आज समाज अस्वस्थ है और यदि कोई समाज का चिकित्सक बन सकता है तो वे होगी हमारी बहिने।

मलका जमाव आंतो मे होता है। वहिने समाज की आन्तें है। सवसे ज्यादा रूढियो से वे ही चिपकी रहती हैं। जब आते किसी दवा का माध्यम, या स्वय चिकित्सक वन जाती हैं और भीतरी जमाव को वाहर फेंक देती हैं, आदमी स्वस्थ हो जाता है। रूढियो को निकाल फैकने की हिम्मत उन्हे ही करना होगा। समाज का पूरा भीतरी भाग वहिनो के अधीन है। उनमे मातृ हृदय है। वे यदि धारले समाज की रूढियो को बहुत आसानी से निकाल सकती है। इन्ही वहिनो मे सोई हुई चडी, शिवा, भवानी और दुर्गा जब जागेगी, समाज की ये विश्रृ खलतायें, अनावश्यक परम्पराएं मिट जायेंगी और हम देखेंगे, फिर से समाज स्वस्थ हो जाएगा। अस्तु, यदि स्वस्थ समाज का निर्माण करना है, तो वहनो को ही चिकित्सक बनना होगा।

"छव काय हणें हणावें नही, हणता भलो न जाणें ताय।
मन वचन काया करी, ए दया कही जिणराय ॥"
—आचार्य श्री भिक्षु (अनुकम्पा अष्टम गीति, दोहा ३)

श्रद्धा-सुमन

— मुनि श्री जशकरणजी

प्रभुवर महर कराओ भक्त दर्शन को आया है।
क्यो ना दर्श दिलवाते, भक्त दर्शन को आया है।।

चढाता सुमन श्रद्धा के, मेरे इन गोरे हाथो से।
अनिमिष देखता तुमको, हमेशा प्यारी आँखो से।।
भक्ति के गीत ये गाने, भक्त दर्शन को आया है।
प्रभुवर महर कराओ, भक्त दर्शन को आया है।। १।।

तुम्ही थे सूर्य भारत के, किया अज्ञान तम दूरा।
तुम्ही तो तत्वदर्शी थे तेरा आधार है पूरा।।
अहिंसा सत्य पर चलने, भक्त दर्शन को आया है।
प्रभुवर महर कराओ, भक्त दर्शन को आया है।। २।।

बताया ज्ञान दर्शन का, मार्ग मुक्ति का तुमने।
क्षमा धर्म का आदर्श, भारत को दिया तुमने।
"जस" उस मार्ग पर चलने, भक्त दर्शन को आया है।।
प्रभुवर महर कराओ, भक्त दर्शन को आया है।। ३।।

तर्ज—बहारो फूल बरसाओ मेरा महबूब आया है

जीव जीवै ते दया नही, मरै हो ते तो हिंसा मत जाण।
मारणवाला नै हिंसा कही, नही मारै हो ते तो दया गुण खाण।।
—आचार्य श्री भिक्षु (दया)

आचार्य तुलसी के प्रति

—मुनि श्री नथमलजी
(निकाय सचिव)

मैं जल को,
सावुन से धोकर,
निर्मल करने का प्रयत्न क्यो करू ?
जो सहज निर्मल है ।

मैं सूरज को,
दीपक लेकर
दिखाने का प्रयत्न क्यो करू ?
जो सहज आलोकित है ।

मैं अवकाश को
थोडा अवकाश देकर,
वटाने का प्रयत्न क्यो करु ?
जो सहज अनत है ।

मैं सत्य को
भाषा देकर
समझाने का प्रयत्न क्यो करु ?
जो स्वय वोलता है ।

चलने वाले !

—मुनि श्री दुलीचन्दजी "दिनकर"

ओ ! चलने वाले रुकने का, तुम नाम कही भी मत लेना।
जीवन की जोखिम अपनी, शिव-नगरी तक पहु चा देना ॥

मोह महीप के दूत यहाँ आ, तेरे पथ को रोकेगे।
पकड-पकड कर अचल तुझको, उलटे पथ पर खीचेगे।
कभी करेगे तेरे मानस पर वे हमला-बाजी भी।
कभी प्रलोभन देकर झूठा, तुझे करेगे राजी भी।
पर, चलने वाले रुकने का ॥ १ ॥

पाएगा भव-मोड-मोड पर, खुली विश्व-मधुशालाएँ।
जहा पिलाती होगी सुख-मधु,- दु सग साकी बालाएँ।
स्नेह नूपुरो की रिमझिम, झनकारे जहाँ होती होगी।
भावुकता विभ्रम दिखलाकर, तुझको वश करती होगी।
पर, चलने वाले रुकने का ॥ २ ॥

और कही पर विषय-शिलोच्चय उस पथ को होगे घेरे।
खडक-खडक कर पडते होगे, विकट व्याधियो के ढेरे।
उमड-उमड कर आती होगी, आशा की नदिया गहरी।
कही मचलते होगे भीषण क्रोध,-भुजगम भी जहरी।
पर, चलने वाले रुकने का ॥ ३ ॥

लोभरुप वे प्रलय-बवडर, तुझको रोकना चाहेगे।
कही-कही तेरे पर दुर्मति, कुवचन तीर चलायेगे।
माया देवी थिरक-थिरक कर तुझको नृत्य दिखाएगी।
और दिखाकर तरह-तरह के, खेल तुझे भरमाएगी।
पर, चलने वाले रुकने का ॥ ४ ॥

आशा दीपक ले कर मे, फिर कदम-कदम बढते जाना।
त्याग तपस्या शस्त्र तुम्हारे, उनको कही न बिसराना।
और विशुद्ध धर्म सहचर को, रखना हरदम अपने सग।
पा जाओगे निश्चित मञ्जिल खिलते है जहाँ अनुपम रग।
पर, चलने वाले रुकने का ॥ ५ ॥

●

तर्ज—ओ चलने वाले रुकने का

उत्तर सहज कर दो !

—मुनि श्री बुद्धमलजी
(साहित्य परामर्शक)

गहन हो जब प्रश्न; उत्तर सहज कर दो।

उलझते व्यापार मन के है निरन्तर,
तुम उन्हे अधिकार की वाणी न वोलो,
मौन मे अपनी सवलता को छिपाओ,
किन्तु शब्दो मे न उनका भेद खोलो,

सूक्ष्मता की शक्ति से परिचित रहो तुम,
स्थूलता की दीनता उसमे न भर दो।
गहन हो जब प्रश्न, उत्तर सहज कर दो।

ताप इतना है कि सव कुछ पिघलता है,
किन्तु कैसे चेतना को पिघलने दू ?
आँख के घर जो अतिथि आते रहे है,
क्यो उन्हे फिर विकलता से निकलने दू ?

तिमिर से केवल घृणा ही कर रहे तो,
भावना की देहली पर दीप घर दो।
गहन हो जव प्रश्न, उत्तर सहज कर दो।

कौन कितने प्राण मे प्रेरित हुआ है,
बुद्धि का यह निकष क्या वतला सकेगा ?
मनुज से उसकी मनुजता जोडने मे,
कौन सा युग-चरण है, जो फिर थकेगा ?

क्यो किसी प्रतिविम्व मे तुम उलझते हो ?
सत्य को गति के लिए नूतन शिखर दो।
गहन हो जव प्रश्न, उत्तर सहज कर दो।

●

शासण आपाँरो

—तपस्वी मुनि श्री मिलापचन्दजी

दोहा

रह्यो अखी रहसी अखी, शासण रो सम्मान ।
है हाजर हरवक्त मे (इण) शासण खातर प्राण ।।

❖❖❖

इण शासण रो म्हाने अभिमान हो,
इण पर घणो गुमान हो,
इण पर वारा प्राण हो,
भिक्षु शासण आपारो,
आछो शासण आपारो,
साचो शासण आपारो,
भिक्षु शासण आपारो,

एकी नेकी इण शासण री सगला स्यू निरवाली है ।
त्याग-तपस्या इण शासणरी जोश जगाणेवाली है ।
इण शासण री समता ऊपर जग कुर्बान हो ।।
इण पर० ।। १

भारीमाल-सा आज्ञाकारी इण शासण रा नेता हो ।
ऋषिराय-सा ब्रह्मचारी इण शासण रा नेता हो ।
जयाचार्य-सा गण-उन्नायक युग-प्रधान हो ।। इण० ।। २

परम पवित्र हुआ मघवा-सा, माणक शीतल जल सागी ।
डालगणी-सा तेज प्रतापी, कालूगणि-सा सौभागी ।
तुलसी-सा आचार्य चक्रवर्ती- महान हो ।। इण० ।। ३

साधु-साधवी एक-एक स्यू जीवन दानी वलिदानी ।
श्रावक-श्राविका हुआ सघ मे एक-एक स्यू अगवानी ।
शासण फूलो फलो "मिलाप" रा ऐ अरमान हो ।। इण० ।। ४

●

राग—धरती काश्मीर री

आज नहीं तो कल···

—श्रमण-सागर

आज नही तो कलतक तुम्हे बदलना होगा,
आखिर युग के साथ साथ ही चलना होगा।

आज नही तो कलतक तुम्हें बदलना होगा।

युग क्या है? हम सब की सामूहिक प्रवृत्तियां,
परम्परा है पूर्वजनो की अनुवृत्तिया।
जब हम सब चाहते हैं युग को स्वय बनाते,
परम्परा हम स्वय चलाते, स्वय मिटाते।
हम से भिन्न बनाना और मिटाना क्या है?
हम से भिन्न जलाना और बुझाना क्या है?
जैसे भी हो युग सांचे मे ढलना होगा,

आज नही तो कलतक तुम्हे बदलना होगा।

युग गतिशील बहाव, देखकर मत घबराओ,
या प्रवाह को बदलो या उसमे बह जाओ।
यदि क्षमता है किसी तुम्हारी परम्परा मे,
और शौर्य युत जड़े सत्य की गडी धरा मे।
तो डटकर लोहा लो, युग है साथ तुम्हारे,
बहो, अन्यथा बात नही है हाथ तुम्हारे।
युग धक्के से टकरा तुम्हे उछलना होगा,

आज नही तो कलतक तुम्हे बदलना होगा।

युग बदला है अब मनमानी नही चलेगी,
आदर्शों मे पाप-वृत्तिया नही चलेगी।
सभल जायगा उसका भलपन रह जाएगा,
वरना जबरन कानूनी डडा आएगा।

इससे अच्छा है पहले ही मन -समझाओ,
बल बटोर कर अणुव्रत का माध्यम अपनाओ।
आँच लगे पानी को सहज उबलना होगा,

आज नही तो कलतक तुम्हे बदलना होगा।

तुम कहते हो जग सुधरेगा तब सुधरूगा,
तुम कहते हो सब बदलेगे तब बदलूगा।
चकमा देकर तुम्हे निकल जाना आता है,
साबत बिना डकार निगल जाना आता है।
पर याद रहे शोषित जन-मानस उबल पडा है,
भीतर ही भीतर वह विप्लव मचल पडा है।
यदि चाहते हो चैन तो तुम्हे सभलना होगा,

आज नही तो कलतक तुम्हे बदलना होगा।

सेठ चम्पालाल के घर मे "सब के साथ मीठी बोली बोलो" का नियम चालू है, इसी कारण घर मे आपसी प्रेम और शान्ति का साम्राज्य है। सयुक्त परिवार काफी बडा हो चला है फिर भी अलहदा होने का, चूल्हा अलग जलाने का कोई नाम तक नही लेता।

—आचार्य श्री तुलसी

मन का मैल दूर करो

—मुनि श्री ऋद्धकरणजी 'सुजान'

तू साबुन खूब लगाता, और रगड-रगड कर न्हाता रे।
मन का मैल लेकिन, कुछ तू धोता या नही ॥
तू दिन भर पाप कमाता, और खा पीकर सो जाता रे।
जीवन का सुधार, पर कुछ होता या नही ॥ टेर ॥

तन तो है निरा मिट्टी का बूँद पडे गल जाएगा ।
हरा भरा यह चमन एक दिन, अवश्यमेव मुरझायेगा ॥
टप टप करता जलघट, खाली होता या नही ॥ १ ॥

माना है मधुमास आज पर, पतझड भी तो आयेगा ।
हरा भरा यह चमन एक दिन, अवश्यमेव मुरझायेगा ॥
जहाँ साझ है वहाँ सवेरा, होता या नही ॥ २ ॥

दीख रही है रात जहाँ, वहा दीवस भी होने वाला है।
उजला उजला जो उपर से, वो भीतर से काला है ।
कोमल कोमल फूल मे, काटा होता या नही ॥ ३ ॥

नाव पडी मझधार मे माझी, चिंता नही तुझको उसकी।
पी मदिरा जो मस्त बना है, बात नही तेरे वसकी ॥
बुरे पाप के बीज बोल तू, बोता या नही ॥ ४ ॥

चचल है माया इस जग की, इस पर तू क्या इठलाता ।
धूप छाव का क्रम चलता है, जो न कभी भी रुक पाता ॥
सुख मे हसता वह फिर, दु:ख मे रोता या नही ॥ ५ ॥

नाम प्रभु का एक खरा है, झूठा है ससार सभी।
"ऋद्ध" हृदय मे रख प्रभुवर को, होगा बेडा पार तभी ॥
पाव घडी प्रभु नाम जप्या बिन, सोता या नही ॥ ६ ॥

तर्ज—मेरे मन की गगा

●

साथी, आगे बढ़ते जाओ !

— मुनि श्री रिद्धकरणजी 'द्वितीय'

साथी, आगे बढते जाओ !

जीवन के अन्तिम श्वासो तक, साध्य शिखर पर चढते जाओ ।
दुष्कर बढने का पथ होता, कायर आँखें भर भर रोता ।
छेक सभी को तुम अपना, वह अतुल आत्म-साहस दिखलाओ ॥
साथी आगे बढते जाओ ॥ १ ॥

विघ्न परीक्षा को आते हैं, जो इनसे घवरा जाते है ।
कैसे आगे वढ पायेंगे, यही तत्त्व मन को समझाओ ॥
साथी आगे वढते जाओ ॥ २ ॥

सघर्षो मे जीवन वनता, दुख में पक पक रस से सनता ।
इसी तुला पर निजको तोलो, फिर अपना आदर्श दिखाओ ॥
साथी आगे बढ़ते जाओ ॥ ३ ॥

कष्टो से होओ न पराजित, छोडो कभी न सत्पथ स्वीकृत ।
विजय अवश्यभावी होगी, कर्तव्यो को पूर्ण निभाओ ॥
साथी आगे वढते जाओ ॥ ४ ॥

हंसते हँसते सघर्षो पर, जीवन को करदो न्यौछावर ।
इतिहासी पन्नो पर अपना, स्वर्णाक्षर मे नाम लिखाओ ॥
साथी आगे वढते जाओ ॥ ५ ॥

अनावश्यक प्राचीनता को समेटते जाना ही विकास का सही मार्ग है । किसी भी तत्त्व का मूल्याकन नवीनता व प्राचीनता से नही होता । अच्छाई की कसौटी एकमात्र सद्गुण है ।

—आचार्य श्री तुलसी

शत-शत अभिवन्दन !

मुनि श्री मूलचन्दजी 'मराल'

देव ! तुम्हारे श्री चरणों मे, शत-शत अभिवन्दन है मेरा ।। टेक ।।

तुलसी ! तेरी गौरव-गाथा, जन-जन के मुख गाई जाती ।
तुलसी ! तेरी उज्ज्वल-ज्योति, जन-जन का अज्ञान मिटाती ।।
तेरे गुण परिमल लेने को, जन-भ्रमरो का रहता घेरा ।
देव ! तुम्हारे श्री चरणो मे, शत-शत अभिवन्दन है मेरा ।। १ ।।

नैतिक पतन देख मानव का, तेरे दिल मे कम्पन छाया ।
इन्ही कारणो से प्रेरित हो, मानवता का पथ दिखलाया ।।
अणुव्रत के माध्यम से होता, जन-समूह मे स्वागत तेरा ।
देव ! तुम्हारे श्री चरणो मे, शत-शत अभिवन्दन है मेरा ।। २ ।।

धर्म-समन्वय की सुनीति पर, तुमने अपने चरण बढाए ।
अनेकान्त के सिद्धान्तो पर, मतभेदो को दूर हटाए ।।
सत्य अहिंसा पर आधारित, दिया जगत को नव्य सवेरा ।
देव ! तुम्हारे श्री चरणो मे, शत-शत अभिवन्दन है मेरा ।। ३ ।।

धर्म-ज्ञान का तत्व न पाते, धार्मिक रूढिग्रस्त बन जाते ।
केवल क्रिया काण्ड के बल पर, धार्मिकता की छाप लगाते ।।
धर्म-क्रान्ति की सफल नीति पर, दिया विश्व को दिव्य उजेरा ।
देव ! तुम्हारे श्री चरणो मे, शत-शत अभिवन्दन है मेरा ।। ४ ।।

इन पवित्र उद्देश्यो को ले, उत्तर से दक्षिण मे आए ।
नैतिकता का बिगुल बजाते, जाति-वर्ण के भेद मिटाए ।।
ऐसा दो संदेश दया-निधि ! मिट जाए परिव्याप्त अंधेरा ।
देव ! तुम्हारे श्री चरणो मे, शत-शत अभिवन्दन है मेरा ।। ५ ।।

[आचार्य श्री तुलसी की २१ मास की लम्बी पदयात्रा का संक्षिप्त वर्णन देकर लेखक ने गागर में सागर भर दिया है। —सम्पादक]

तुलसी-पदयात्रा

—मुनि श्री मोहनलाल जी 'सुजान'

देव! तुम्हारी दक्षिण-यात्रा सफल हुई है, सफल हुई।
'जन-जन उन्नत बने' नीति यह सबल हुई है, सबल हुई॥

'मिगसर' मे मद्रास नगर के उपनगरो का नवर था।
छोटे-मोटे बावीस की संख्या मे विहरण सुन्दर था॥
पावन-पावस मे अणुव्रत का, घोष जो घर-घर फैला था।
इस विहरण मे जन-जनव्यापी बन गया वही उजेला था॥

'पौष' मे राजाजी से मिलना, चंगलपेठ मे जय-जयकार।
महावली फिर पक्षी-तीर्थ मे, वालाजी, काची के द्वार॥
तिण्डीवनम् मे दिगम्बरो ने आपसे खूब सम्पर्क किया।
तिरुनामलै के प्रोगामो मे, सब ने खुलकर भाग लिया॥

'माघ' विलिपुरम्, पाडीचेरी मे, वी डी जत्ती स्वागत कर्ता।
आश्रम मे मानाजी का मिलना भी कई तथ्यो का धर्त्ता॥
चिदम्बरम् का माघ-महोत्सव, गौरवमय इतिहास बना।
कौम्भकोणम् मे दीक्षा महोत्सव 'कुन्दन' मन सोल्लास बना॥

'फाल्गुन' तजौर और त्रीचि मे देव स्थान वृहत्तम है।
मदुरै का मीनाक्षी जिसमे चरण धरे उत्तमोत्तम है॥
दक्षिण का वह छोर जहाँ, सागर तीनो लहराते है।
कन्याकुमारी मे कुछ निर्णय करके वे हर्षाते है॥

'चैत्र' त्रिवेन्द्रम के महाराजा, केरल की राजधानी मे।
मुख्य मन्त्री से वार्ता का प्रोग्राम बनाया 'दसाणी' ने॥
कम्यूनीज्म सरकार ने भी अपना सद् सहयोग दिया।
कोचीन जयन्ती महावीर की गुजरातियो ने भाग लिया॥

वैशाख' पूर्ण केरल की यात्रा पाल घाट मे होती है।
तमिलनाडु का नगर, कोयम्बतूर मे जगमगाती ज्योति है ॥
उटक-मण्ड के रम्य स्थल मे अक्षय-तृतीया आती है ।
वर्षीतप के पारणो और प्रोग्रामो से खिल जाती है ॥

'ज्येष्ठ' मास ऊटी की घाटी, बीहड जङ्गल पार किया।
मैसूर-प्रान्त के लम्बे चौडे पथ पर पाद-विहार किया ॥
मैसूर नृपति से मिलना सुन्दर था दीक्षा का ठाट लगा।
द्रष्टव्य-स्थल पावन करते मडिया क्षेत्र सौभाग्य जगा॥

प्रथम 'अषाढ' श्रावण वेलगोला, बाहुबली की मूर्ति विशाल ।
सघ चतुष्टय साथ पधारे, गिरि का देखा ऊँचा भाल ॥
हासन-सकलेश, मुडीगेरी, बेलूर का मन्दिर है विख्यात ।
चिकमगलूर से अभिनव प्रकरण, हुई विसर्जन की शुरूआत ॥

'आषाढ' दूसरा प्रकृति की गोदी मे अनुपम स्वच्छ बगीचे मे ।
भव्य छटा थी तरीकेरे, भद्रावती और सिमोगे मे ॥
चन्दन के वृक्षो की श्रेणी, शिकारपुर और चिनगेरी।
चतुर्मास-प्रवास करें, प्रभु! सोत्सुक थी बेंगलूर नगरी॥

बेंगलूर के शुभागमन पर लोग हजारो आए थे ।
मुख्यमत्री मैसूर राज्य भी स्वागत कर हर्षाये थे ॥
असख्य जनो का था जुलूस, अच्छी स्वस्थ व्यवस्था थी ।
परिषद, सभा, सदस्यो की कर्तव्य पूर्ण अवस्था थी ॥

'श्रावण' समवशरण आश्रम मे चातुर्मास प्रवासस्थल ।
अणुव्रत-ग्राम था नव-निर्मित यात्री गण का वास-स्थल ॥
साप्ताहिक अणुव्रत, शिक्षण का कार्य व्यवस्थित था सुन्दर ।
अल्पवयस्का सतियो की भी आठ-अठाई थी सुखकर ॥

'भाद्रव' मास मे धर्म-जागरण का अनुपम उल्लास जगा।
पर्युषण था शिविर रूप मे सहस्र जनो का मेला लगा ॥
पट्ट उत्सव का समारोह था, जन जन का आकर्षण ।
चरमोत्सव के दिन भिक्षु स्वामी का होता था अन्तर-दर्शन ॥

'आश्विन' उपनगरो मे विहरण का सुन्दर सयोग मिला।
युवजन परिषद् का अधिवेशन, मानो क्रान्ति का योग मिला।।
अणुव्रत अधिवेशन पर भी, शुभ चिन्तन और विचार हुआ।
गति आये निश्चय आन्दोलन मे, ऐसा कुछ आसार हुआ।।

चतुर्मास के प्रारम्भ मे ही 'भरत' बने मुनि व्रत धारी।
लाल बाग ग्लास हाऊस मे हुई दीक्षा की तैय्यारी ।।
कार्तिक मे भी दिक्षा का, उत्सव फिर से रग लाता है।
और अनेको कार्यक्रमो से चातुर्मास खिल जाता है।।

बारह वर्षों की प्रतीक्षा पर तुम दक्षिण मे आए।
इक्कीस मास तक जन-जीवन को प्रमुदित मन विकसाये।।
मद्रास और बेगलौर नगर के दोनो ऐतिहासिक पावस।
स्वर्णाक्षर मे अकित होगे, पुलकित होगा जन-मानस।।

प्रभो! आपकी इस यात्रा मे अणुव्रत का व्यापक प्रचार।
जैन-धर्म और तेरा पथ का गौरव बढा यहाँ अनपार।।
दक्षिण-वासी का यात्रा मे सुन्दर-सा सहयोग मिला।
'मुनि मोहन' आराध्य देव लख, जन-जन का मुख कमल खिला।।

सयम ही जीवन है। अणुव्रत आन्दोलन का यह प्राण है। मानव जीवन का यह सार है। संसार की सुन्दर व्यवस्था का यह आधार है। सयम का सीधा-सा अर्थ है नियम, सीमा, मर्यादा, व्रत।

—आचार्य श्री तुलसी
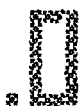
मेरे प्रभु !

—मुनि श्री बालचन्दजी 'द्वितीय'

मेरे प्रभु का पाट महोत्सव, मना रहे हम आज सभी।
ऐसा अवसर पुण्य योग से मिलता है, पर कभी कभी ॥

उत्तर से दक्षिण तक तुमने, भारत को है फरसा।
वृद्ध युवा बालक सब का, मन-मोर जोर से हरसा ॥

झुकते रहते शीश हजारो, इन चरणो मे अभी अभी।
मेरे प्रभु का पाट महोत्सव, मना रहे हम आज सभी ॥ १ ॥

तन मन दोनो जीत लिये हैं, तुमने इस जगती के।
ओर छोर भी नाप लिये हैं, तुमने इस धरती के ॥

जो वत्सलता दी तुमने, वह भूल सकेंगे नही कभी।
मेरे प्रभु का पाट महोत्सव, मना रहे हम आज सभी ॥ २ ॥

जहा पसीना गिरा तुम्हारा, सुख के झरणे फूटे।
जहा चरण टिक गए तुम्हारे, दुःख के हैं पग छूटे ॥

जग उद्धारक ऐसा जग मे, आता है पर कभी कभी।
मेरे प्रभु का पाट महोत्सव, मना रहे हम आज सभी ॥ ३ ॥

कोड दिवाली तपोभूमि पर, सेवा का अवसर दो।
'बालचन्द' मुनि की झोली, तुम कृपा दृष्टि से भरदो ॥

चार तीसवा पाट महोत्सव, मना रहे हम सभी अभी।
मेरे प्रभु का पाट महोत्सव, मना रहे हम आज सभी ॥ ४ ॥

तर्ज—अरे सज्जनो धर्म ध्यान

बढ़े चलो !

—मुनि श्री मधुकर जी

बढे चलो ! अब मजिल पर अधिकार हमारा है ।
बलिदानो से भरा हुआ ससार हमारा है ॥

* ● *

किया समर्पित आत्म-भाव से, तन धन जीवन,
सभी दिशाए आज कर रही झुक झुक वन्दन !
खून पसीना भले बहे, नही प्यार हमारा है ॥
बलिदानो से भरा हुआ ससार हमारा है ॥

है सबकी आवाज एक हम साथ चलेगे,
भरो स्नेह से जग-मग-जग-मग दीप जलेंगे ।
उन्नत है प्रासाद, सुदृढ आधार हमारा है ॥
बलिदानो से भरा हुआ ससार हमारा है ॥

एक केन्द्र है, एक ही आस्था, एक ही रास्ता,
मस्त स्वय मे नही किसी से कोई वास्ता ।
सबसे उत्तम अधिकृत-आविष्कार हमारा है ॥
बलिदानो से भरा हुआ ससार हमारा है ॥

कभी न झुकना सीखा हमने अपने प्रण से,
कभी न हटना सीखा हमने समरागण से ।
जुडा साधना-तन्त्री से जब तार हमारा है ॥
बलिदानो से भरा हुआ ससार हमारा है ॥

कितने बने नीव के पत्थर कर कुर्बानी,
श्रद्धा से मस्तक झुकते जब सुने कहानी ।
"मधुकर" सबके लिए खुला अब द्वार हमारा है ॥
बलिदानो से भरा हुआ ससार हमारा है ॥

तर्ज—आग उगलती तोपो ने हमको ललकारा है

धर्म रह्यो है बातां में

—मुनि श्री वत्सराजजी 'लाडणू'

अब धर्म रह्यो है वाता मे
घट मे तो ज्वाला भभकै है
पण माला राखे हाथा मे ॥

—o—

खोटो है काम कसाई रो,
वो किया काल जो काटै है
वो करुण नजारो देखा जद
म्हा की तो छाती फाटै है
वो दया दिखावै कीड्या पर
बस दान दिखावै कीड्या पर
बस दानवीरता बाता मे
वे काटै गला गरीबा रा लिख—
उलटा - सुलटा खाता मे
अब धर्म रह्यो है बाता मे ॥ १ ॥

पढ लिखकर कई वकील बण्या,
दुनियाँ नै न्याय बतावे है
वे गिटे जीवती माखी नै,
जद नोट सामने आवै है ।
आँख मीच अधारो करदे,
मिनख चाँदणी राता मे ।
रखवालो कोई रह्यो नही,
अब साच रूलै है लाता मे
अब धर्म रह्यो है बाता मे.... ॥ २ ॥

पुडिया मे माटी भर देवै,
मोत्यारी भसम बतावै है
जनसेवक वेद कहावै है
ओ कैसो फरज निभावै है
नाडी ने देख बतादेवे जो
घाव छिप्यो है आता मे
खुद उलटे रास्ते चालै है
कै दोष हुओ है माथा मे ॥
अब धर्म रह्यो है बाता मे.. ॥ ३ ॥

पर्दा-घूंघट

अब जमाने मे काफी परिवर्तन हो चुका है। उस जमाने की बात अब नही चलने की। आज बहनो को भोग विलास और मन बहलाव का साधन मात्र समझना और उनको परदे घू घट मे छिपाकर रखना मातृ-जाति का अपमान समझा जाता है। आज न तो औरतो की छीना-झपटी चलती है और न उनको सम्पति मे शुमार किया जाता है। अत बहनो को पर्दा ओढा कर, लगेज की तरह बडल बना कर रेल के डिब्बे मे चढाने की या रखने की जरूरत नही। कानून ने उनको बरावरी का हकदार मान लिया है।

—आचार्य श्री तुलसी

कर्मनिष्ठ

—मुनि श्री जतनमलजी 'प्रयत्न'

कर्मनिष्ठ हूँ काम चाहिए,
नही निरर्थक नाम चाहिए,
ये हाथ कार्य हित जब चलते,
ऊषर मे भी पौधे खिलते,
मन चाहे मुक्ताफल मिलते,
बिखरी निधि को गोदाम चाहिए
कर्मनिष्ठ हूँ काम चाहिए ॥ १ ॥

आलस्य दूर से डर जाये,
भौतिकता पनप नही पाये,
तम बादल स्वत बिखर जाये,
वैसा अभिनव धाम चाहिए,
कर्मनिष्ठ हूँ काम चाहिए ॥ २ ॥

जो कटु बीजो को बोता है,
औ वृथा समय को खोता है,
आखिर मे सिर धुन रोता है,
[वह] मुझे नही विश्राम चाहिए,
कर्मनिष्ठ हूँ काम चाहिए ॥ ३ ॥

कर्त्तव्यो पर विश्वास मुझे,
बस और न कोई प्यास मुझे,
जी, नही चाहिए दास मुझे,
केवल आत्मा राम चाहिए,
कर्मनिष्ठ हूँ काम चाहिए ॥ ४ ॥

मैं अपने मे मस्त रहूँ,
नित सत्य शोध मे व्यस्त रहूँ,
उस मानव को मैं अस्त कहूँ,
जिसे सदा आराम चाहिए,
कर्मनिष्ठ हूँ काम चाहिए,
नही निरर्थक नाम चाहिए ॥ ५ ॥

झांकी

—मुनि श्री पानमलजी

सुनो सुनो ए श्रोताओ अणुव्रत आन्दोलन का इतिहास,
सहस्र-सहस्र लोगो ने इसको अपना करके किया विकास ॥

❖❖❖

भारत देश स्वतन्त्र हुवा था, उसी समय की है यह वात,
नैतिक मूल्यो पर होती थी, खुले आम वस प्रत्याघात ।
छापर पुर मे श्री तुलसी प्रभु विता रहे थे वर्षावास ॥१॥ सु० ॥

ऐसी स्थितियो मे सामाजिक जीवन जीना कठिन हुवा,
अनैतिकता के महाभयकर विष को पीना कठिन हुवा ।
आस्थाओ के अध पतन से होता था जीवन का ह्रास ॥२॥ सु० ॥

अगले दिन प्रेरक प्रवचन मे परिषद् को आह्वान किया,
सुनते ही पच्चीस व्यक्तियो ने अपना शुभ नाम दिया ।
नैतिक पथ पर सदा चलेंगे यही करेंगे हम अभ्यास ॥३॥ सु० ॥

दो हजार पाच फाल्गुन शुक्ला द्वितीया का दिन आया,
अणुव्रत आन्दोलन का यह प्रारभ दिवस है कहलाया ।
फिर तो आगे से आगे यो नित प्रति चलता रहा प्रवास ॥४॥ सु०॥

वार्षिक अधिवेशन ने तो दिल्ली मे की हलचल भारी,
अणुव्रतो की चर्चा सुनने को उमड पडी जनता सारी ।
देश विदेशो मे भी इसका हुवा अनोखा नया प्रकाश ॥५॥ सु० ॥

दैनिक पत्र पत्रिकाओ ने आन्दोलन को स्थान दिया,
और विदेशी पत्रो ने भी श्रद्धायुत सम्मान दिया ।
राज्य-विधान सभाओ मे इसका प्रस्ताव हुवा है पास ॥६॥ सु० ॥

सभी पार्टियो के नेताओ ने पूरा सहयोग दिया,
राज्यकर्मचारी, व्यापारी, विद्यार्थीयो ने योग दिया ।
साहित्य क्षेत्र मे भी फैली इसकी अपनी पावन सुवास ॥७॥ सु०॥

आन्दोलन के प्रति लोगो का बहुत बडा उत्साह जगा,
राष्ट्रीय स्तर पर सार्वजनिक बस रूप नया ही मिलने लगा।
सत्य, अहिंसा, ब्रह्मचर्य, आदि लघु २ व्रत है ये खास ॥८॥ सु०॥

बीस हजार मील की, पद यात्राएं श्री तुलसी ने की,
भेद भाव के बिना सभी लोगो को यही प्रेरणा दी।
धैर्य न खोवो अणुव्रतो मे रखो हमेशा दृढ विश्वास ॥९॥ सु०॥

पश्चिम से पूर्वी अचंल तक, पहुँच गई इसकी आवाज,
उत्तर से लेकर दक्षिण तक, गूंज रहा है अणुव्रत आज।
इसके पीछे जुटे हुवे जीवन दानी छ सौ पचास ॥१०॥ सु० ॥

दक्षिण भारत मे तुलसी का सर्वप्रथम यह शुभागमन,
इस उन्तीसवें अधिवेशन पर आज हमारा प्रमुदित मन।
प्रभो ! तुम्हारी वत्सलता को भूल न पाएगा मद्रास ॥११॥ सु० ॥

अणुव्रत आन्दोलन ने जग को नये-नये उन्मेप दिये,
राष्ट्रीय अन्तर्राष्ट्रीय आदि देश व्यापी प्रोग्राम किये।
'पानमुनि' आगे से आगे बढे चलो मत बनो निराश ॥१२॥ सु० ॥

न लवेज्ज पुट्ठो सावज्जं, न निरट्ठं न मम्मयं।
अप्पणट्ठा परट्ठा वा, उभयस्सन्तरेण वा ॥

किसी के पूछने पर भी अपने, पराए या दोनो के प्रयोजन के लिए अथवा अकारण ही सावद्य न बोले और मर्म-भेदी वचन न बोले।

—भ० महावीर

अनुभूति-बोलती है

—मुनि श्रीचन्दजी 'कमल'

● मिथ्या आरोप लगाने वाले के साथ भी प्रेम के हाथ बढाओ। ज्ञान की चक्षु खुलने पर वह स्वयं तुमसे क्षमा मागेगा। यदि अज्ञानवश न भी मागे तो तुम स्मृति मे उसका भार कब तक ढोओगे ? उसे भूलकर अपने को हल्का बनालो।

● किसी का सम्मान देखकर उसे अपना अपमान मत समझो और न उससे ईर्ष्या करो। अपने मे दबी अयोग्यता को टटोलो और मिटाने का तीव्र प्रयत्न करो।

● किसी के द्वारा तुम्हारी योग्यता को दबाए जाने पर भी तुम निराश मत बनो। यदि उसमे स्फुलिंग है तो समय के परतो को भेदकर भी वह प्रकाश देगी।

● भक्त दर्शन का भिखारी बनकर गली-गली में भटकता रहे और भगवान गगनचुम्बी अट्टालिकाओ मे सुख से बैठे एकान्त साधना करते रहे, यह कब तक सह्य होगा ? भक्त हृदय की कोमलता भगवान का पत्थर हृदय स्वप्न मे भी नही जान सकता। उसके मन की घायलता को पहचानने के लिए भगवान को भी नीचे उतरकर भक्त हृदय बनना होगा।

● मनुष्य के दो आखे होती हे। विवेक मे जहाँ चार आँखे भी होती है। वहाँ आवेश मे सहज उपलब्ध दो आखे भी खो जाती है।

● सद् व्यवहार सबके साथ करो, विश्वास थोडो का करो और मित्रता उसके साथ करो जो तुम्हारे प्यार का प्यासा हो।

● दिया जाने वाला विश्वास वाचाल होता है, उसके पीछे कमजोरी पलती है। कार्य से पैदा होने वाला विश्वास मूक होकर भी अधिक सूचक होता है।

● प्रतिशोध हृदय मे छिपी एक धधकती आग है, अवसर की प्रतीक्षा मे जो जीवन भर जलती रहती है। क्षमा याचना के व नम्रता की एक दो बूंदो से वह ठंडी पड जाती है, पर प्रतिशोध से जीवन भर नही बुझती।

● निर्दोष को कारा इसलिए मिलती है कि वह दाव पेच खेलना नही जानता। दोषी इसलिए हसता है कि वह सत्ता की वेदी पर खडा होकर हर प्रश्न का उत्तर देना जानता है।

● दूसरे की ऊँचाई पर टिकने वाला अहं लगडा होता है, जो अपनी सुरक्षा के लिए एक कदम भी नही चल सकता। वह झूठा अहं ऊचाई का सम्मान भी खो देता है।

● अन्तर हृदय का प्रेम व्यवहार नही मांगता। जहाँ व्यवहार की आकाक्षा जगती है और उसकी माग होती है, प्रेम पगु बन जाता है। आँखो मे स्नेह वही टपकता है जहाँ हृदय होता है।
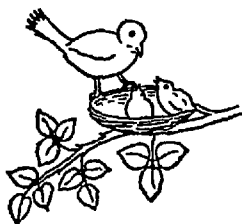
मेरे प्रयोग मे आध्यात्मिक शब्द का अर्थ है नैतिक, धर्म का अर्थ है नीति, और जिस नीति का पालन आत्मिक दृष्टि से किया हो, वही धर्म है।

—महात्मा गाधी (महात्मा गाधी पृष्ठ ६)

आधुनिक सभ्यता पर एक व्यंग—

कुरतो पूछे कोटने, सुण रे मोटा भाई।
इती स्याणप शिष्टता, इती सभा चतुराई ॥
इती सभा चतुराई, वोलदादा आकठे सिखी।
वण कर अपटुडेट, नजर मारे पर राखे तीखी ॥
इक हाथा घडिया घडा इतो फर्क है काई।
कुरतो पूछे........................ ... . . ॥

काट कहे रे वावला, तू तो समझे नाँही।
ढिली धोती बाणियो सगले लूट्यो जाई ॥
सगले लूट्यो जाई, तू तो रह्यो भोलो रो भोलो।
अेक्सपार्ट बणिया बिना आज कुण पूछे बोलो ॥
साफ साफ है बात, सुण रे छोटा भाई।
तू रह्यो सिधो-सादो मैं धारी नँकटाई ॥

कुरतो कोटने पूछ्यो

—मुनि श्री मोहनलालजी 'आमेट'

बहुत से आदमी मिश्र-धर्म की प्ररूपणा करते हैं, कहते हैं यहाँ थोडी हिंसा है, इसलिए थोडा पाप है, और अधिक प्राणी बच जाते हैं, इसलिए अधिक धर्म है। यह गलत सिद्धान्त है। हिंसायुक्त कार्य मे धर्म हो ही नही सकता। क्या बहुत से जीवो की रक्षा के लिए कसाई को मार देना धर्म हो सकता है ?

—आचार्य श्री भिक्षु, भिक्षु यशरसायन दृष्टान्त-२६

चार मुक्तक

—मुनि श्री चौथमलजी 'छापुर'

झूठ बोलने वालो की कोई सीमा नही होती।
हाथी की लीद की कभी भी एनीमा नही होती ॥
ये रोते रोते जन्मे हैं रोते रोते मरेंगे ?
क्योकि खुदा के घर भी उनकी बीमा नही होती ॥

डर तो उन्हे है जो गैरो के सहारे पर बसर करते हैं।
या उन्हे तो जो सापो के साथ हमेशा घसर पसर करते हैं ॥
जो श्रम औ हक की रोटी खाते उनका क्या बिगडना है।
मन्त्र भी ताकतवर पर नही, कमजोर पर ही असर करते है ॥

मूल जडी की अपेक्षा उसके एसेंस मे सत्व ज्यादा होता है।
और गुलाब की अपेक्षा उसके इत्र मे तत्व ज्यादा होता है ॥
व्यक्ति के ऊचाई का राज जनता जनार्दन मे घुल मिल जाता है।
मन्त्रियो के नजर से भी जनता की नजर का महत्व ज्यादा होता है ॥

वजीर को दवाया जा सकता है मगर वजीरता को दवाया नही जाता।
वीर को दवाया जा सकता है मगर वीरत्व दवाया नही जाता ॥
राख आ जाने मात्र से अगारा कभी भी बर्फ नही बन जाता।
व्यक्ति को दवाया जा सकता है मगर व्यक्तित्व दवाया नही जाता ॥

दैव !

—मुनि श्री सम्पतमलजी 'डुंगरगढ़'

देव तुझे क्या भेंट चाहिए ।।

तुम हो अमृत जग के वासी,
मैं भी हूँ उसका अभिलाषी ।
तेरे मेरे मे क्या अन्तर,
वस इतनी सी ज्योति चाहिए ।। देव० ।।१।।

तू है शीतल शरिद शधर,
मैं चकोर हूँ तु ऊर्ध्वधर ।
सतत सुधा की बून्द चाहिए,
वस मेरा उध्धार चाहिए ।। देव० ।। २ ।।

तू है मधु का मीठा प्याला,
मैं मधु प्याला पीने वाला ।
मधुर वचन का जाम चाहिए,
जीवन मे वरदान चाहिए ।। देव० ।। ३ ।।

तू है शीतल रम्य सरोवर,
मैं हूँ उसका ही लघु जलकण ।
पर आश्रय गाम्भीर्य चाहिए,
अमृत की बस धार चाहिए ।। देव० ।। ४ ।।

तू सुन्दर मेघों का चोला,
मैं भी हूँ उसका इक ओला।
पर मारुत अनुकूल चाहिए,
जीवन का आधार चाहिए ।। देव० ।। ५ ।।

तू है नौका खेवनवाला,
मैं हूं उसमे चढनेवाला।
पर सच्ची पतवार चाहिए,
और सही आधार चाहिए ।। देव० ।। ६ ।।

मैं हूँ भेंट चढानेवाला,
देव पुन: तू देने वाला।
तेरा ही वरदान चाहिए,
और सही सस्कार चाहिए ।। देव० ।। ७ ।।

तू है दीपक ज्योति वाला,
कर दो घट भीतर उजियाला।
मुझे क्रान्ति का स्नेह चाहिए,
आत्मिक सच्चा ज्ञान चाहिए ।। देव० ।। ८ ।।

मु क्त क

तारें-नफस के सहारे हम तुम्हारी ओर खिचते चले आए,
कहकशाँ के सितारे हम पर हँसे, फिर भी खिचते चले आए।
मालूम था तुम घिरे होगें महफिल मे रईसो की भीड से,
पर सासो का ताजा गुल किसी के पास न था, इसलिए चले आए ॥

× × × ×

फूलो को अपनी खूशबू का भान हो नही सकता,
कोयल को मीठे गीतो का ध्यान हो नही सकता।
मेरे देवता, खुद को जानना चाहते हो तो हमसे पूछो,
वरना तुम क्या हो, इसका तुमको ज्ञान हो नही सकता ॥

× × × ×

हममे से बहुत सारे ऐसे हैं जो रोज आते है पर अपने पन से नही,
तुम्हे तीन-तीन वार उठ-बैठकर वन्दन भी करते हैं लेकिन मन से नही।
या फिर हमारे मे से बहुत सारे ऐसे भी लोग मिलेगे तुमको यहाँ पर,
जो तुम्हे केवल वडी-वडी बातो से खुश करना चाहते है, जीवन से नही ॥

× × × ×

हमको चिन्ता है कि तुम धर्म की दीवारो को तोड रहे हो,
और हमको डर है तुम धर्म की मीनारो को तोड रहे हो।
हमे क्या मालूम, इन दीवारो और मीनारो के नीचे दवे,
एक दूसरे से टूटे हुए निर्दोष दिलो को जोड़ रहे हो ॥

× × × ×

तुम्हे खुशी होगी कि तुम और तुम्हारे सन्त जो भी बोलते हैं,
उसके एक-एक रहस्य को हम वडी वारीकी से खोलते हैं।
यह बात और है कि किलो और मिलीग्राम के इस जमाने मे भी,
हम तुम्हे उन्ही पुराने घिसे-पिटे वाटो से ही तोलते है ॥

× × × ×

पर तुम हमे माफ करना, क्योकि हमारा दिल छोटा है ज्ञान कम है,
तुम जैसी महान् हस्ती को पाकर भी इन दिलो मे अभिमान कम है।
अपने खून का पसीना कर रोशन किया है हमारा नाम धरती पर।
लेकिन दोष किसे दे, जब हमे ही उस बलिदान की पहचान कम है ॥

—मुनि श्री रूपचन्द्रजी

—मुनि श्री किसनलालजी

गुरुवर हमको तेरा आशीर्वाद चाहिए,
परमाह्लाद चाहिए कि साधुवाद चाहिए।
गुरुवर हमको तेरा आशीर्वाद चाहिए॥

तेरे आशीर्वच से हम, बढते रहेगे हरदम,
स्नेह सुधा का उसमे आस्वाद चाहिए।
गुरुवर हमको तेरा आशीर्वाद चाहिए॥

पर्वत हो या सागर, दानव हो दुष्ट निशाचर,
विजयी बनने का, अन्तरनाद चाहिए।
गुरुवर हमको तेरा आशीर्वाद चाहिए॥

भौतिक भोग दिखाए, या पग पग पर शूल बिछाए,
मजिल को पायें, ऐसा शुभ सवाद चाहिए।
गुरुवर हमको तेरा आशीर्वाद चाहिए॥

तू ही जीवनधन स्वामी, उर के ही अन्तरयामी,
'कृष्ण' मुनि को सयमवाद चाहिए।
गुरुवर हमको, तेरा आशीर्वाद चाहिए॥

तर्ज—यह है जगने की वेला

अमरों का संसार

—मुनि श्री गुलाबचन्द्रजी "निर्मोही"

देव ! सृष्टि के व्याधि-हलाहल की घूंटे पी,
दूर क्षितिज तक अमरो का ससार वसादो ॥
× × ×
चिर अतीत का गौरवमय वह चित्र तिरोहित,
वर्तमान की कुत्स्य विषमता के कारण है।
और अनागत की रेखा भी धूमिल लगती,
जडता की सत्ता परिव्याप्त असाधारण है ।
विस्मृत उस सस्कृति की स्मृति से पुन धरा पर,
नव्य चेतनामय नूतन संसार वसादो ।
देव ! सृष्टि के व्याधि-हलाहल की घूंटें पी,
दूर क्षितिज तक अमरो का ससार बसादो ॥
× × ×
आज सत्य की नग्न विभापा लिए आवरण,
स्पष्टतया जब रह रह कर यो वतलाती है ।
सिर्फ अस्मिता के आवर्त्तो मे सिमटी-सी,
स्थित चैतन्य जगत की वह सुन्दर थाती है।
पुन सत्य मूल्याङ्कन हो उसका जीवन मे,
अब पुनीत चिरकल्पित वह ससार बसादो ।
देव ! सृष्टि के व्याधि-हलाहल की घूंटे पी,
दूर क्षितिज तक अमरो का ससार वसादो ॥
× × ×
छलना की ससृति व्यवहृति मे पलती प्रतिदिन,
स्वप्निल कलना स्पष्ट नही, विश्लिष्ट कही है।
पग-पग पर है भ्रान्ति, भीरुता, व्यवहित मानस,
इतरेतर आकृष्ट किन्तु सश्लिष्ट नही है।
अब व्यवधान समाहित हो सव सहज वृत्ति से,
ऐसा शुभ सौहार्द भरा ससार बसादो ।
देव ! सृष्टि के व्याधि-हलाहल की घूंटे पी,
दूर क्षितिज तक अमरो का ससार बसादो ॥

●

तीन मुक्तक

मुनि श्री मोहनलालजी "शार्दूल"

इन्सान का भगवान

किए विना कोई भी काम आसान नही होता,
सहे विना कोई भी मानव महान नही होता।
गाठ वाध लो उत्थान का मार्ग साधना ही है,
तपे विना कोई इन्सान भगवान नही होता॥

मृदु व्यवहार

दुनिया को तलवार से नही, प्यार से जीतो,
विप को विप से नही, अमृत की धार से जीतो।
तुम यदि किसी का हृदय जीतना चाहते हो तो,
फटकार से नही, सरल मृदु व्यवहार मे जीतो॥

वदलते रहो

रुको मत चलते रहो, वुझो मत जलते रहो,
सागर की लहरो की ज्यो, हर क्षण मचलते रहो,
घवराओ मत कैसा भी समय आ जाये,
समय के मुताविक अपने को वदलते रहो॥

तुम न गाते इन सितारों पर...

—साध्वी श्री कानकुमारीजी 'सरदार शहर'

तुम न आते इस धरा पर तो समझ लो,
इस धरा का रूप ही कुछ और होता।
तुम न गाते इन सितारो पर अगर तो,
इन स्वरो का रूप ही विद्रूप होता।
किरण की काया तिमिर की ऊर्मियो मे,
जब छिपाना चाहती अस्तित्व अपना।
व्योम तट के भाल पर चमके अचानक,
उग गया आलोक का अनजान सपना।
तुम न लाते यह उजारा तो समझ लो,
इस धरा की कलुषता फिर कौन धोता॥ १॥

जिन्दगी के भार ढोने से पराजित,
हो गया था हाफता-सा, सास का रथ।
मनुज अपनी ही उमस मे घुट रहा जब,
विकल प्राणो की पुकारो का कहाँ अथ।
तुम न छाते इस तरह पवमान बनकर,
यह मनुज फिर घुटन मे ही प्राण खोता।
उड गया सिन्दूर धरती का गुलाबी,
माग भरने तब धरा पर कर पसारे।
तडपते बेसुध विहग पाखे बिना जब,
तब उन्हे दे पाख तुम ने ही उबारे।
तुम न देते पाख तो निश्चित समझलो,
यह विहगगण जिन्दगी का भार ढोता॥ २॥

वरदान

—साध्वी श्री सोहनाजी

सर्वोदय इस समवशरण मे, कैसी आज वहार,
देख हृदय मे रह रह उठते, खुशियो के नव ज्वार।
दीर्घ प्रतीक्षा करते करते, सफल हुए अरमान ।
कर्णाटक की इस भूमि मे, मिल पाएँ भगवान ।
पाकर गुरु वात्सल्य, शिष्य मन आनन्दित अनपार ॥ १ ॥ स० ॥

आगम शोधन, दक्षिण यात्रा, अणुव्रत का अभियान।
जन मानस की सुप्त चेतना मे फूके हैं प्राण।
इसी समन्वित नीति भाव पर, श्रद्धानत ससार ॥ २ ॥ स० ॥

जलधर वनकर आए हो, तुम शुष्कधरा सरसाई।
दिव्य धरा के भगीरथ तूने, सयम सरित वहाई।
युग युग रहो लगाते जग की, नैया को उस पार ॥ ३ ॥ स० ॥

एक निवेदन श्री चरणो मे, चाहते गुरुकुलवास ।
आशीर्वाद मिलेगा हमको, यह अन्तर अभिलास।
शासननायक ! भाग्य विधायक, करदो यह साकार ॥ ४ ॥ स० ॥

तर्ज—प्राची की चञ्चल किरणो मे

उपेक्षा और अपेक्षा जीवन के।
हर पहलु को छुहा करती है ।।
अपेक्षा से ही जीवन अम्बर मे।
आशा की किरण चमका करती है ।।

आशा का संचार

—साध्वी श्री सुरजकँवरजी

निराशाएँ भी दूर हटेगी, (अगर) आशा का सचार रहे तो

भव भ्रमण के भय से चेतन ने
कब अपने चेतनत्व को छोडा
बिछुडने से डरकर मानव ने
कब मिलने का ताता तोडा,
नष्ट होने के भय से जग मे
क्या वून्दो का आना रुकता ?
मर मिटने के भय से क्या, जीवन का वह तार सिमटता
शूले भी सब दूर भगेंगी, जो चलने का बल रहे तो
निराशाएँ भी दूर हटेगी, (अगर) आशा का सचार रहे तो ।। १ ।।

महा विथि के बीच अकेला
मानव मस्ती से चलता है
तूफानो की झझावातो मे भी
कब वह पथ से हटता है
बुझने के भय से, क्या जग मे दीपक का जलना रुकता ?
घटाएँ सब बिखर पडेगी, बढने का साहस रहे तो
निराशाएँ भी दूर हटेगी, (अगर) आशा का सचार रहे तो ।। २ ।।

युग के नव अवतार

—साध्वी श्री सघमित्राजी

हे युग के नव अवतार, तुम्हे शत-शत प्रणाम।

तुम ज्योति किरण वन आए हो।
वसुधा पर नव आलोक लिए॥
तुम शातिदूत वन आए हो।
समता का शीतल स्रोत लिए॥
तेरी इन शुभ्र- कलाओ ने।
जग मे कर्तृत्व उभारा है॥
तेरे चिर चिन्तन ने मानव का।
अभिनव रूप निखारा है॥
तेरी क्षमताओ से तेरा।
वन गया जगत मे अमर नाम
हे युग के नव अवतार, तुम्हे शत-शत प्रणाम॥ १॥

हे महापुरुष ! हे महादेव !
धरती के नूतन कलाकार॥
अपनी इस कुशल तूलिका से।
नव नव कृतियो के सृजनहार॥
तुम सरिता वन फैलो भू पर।
लाखो नैया को साथ लिए॥
तेरी चिनगारी से जग मे।
जल उठे हजारो बुझे दिये॥
तुम वढे चलो यह गमन तुम्हारा।
वने विश्व मे अविश्राम
हे युग के नव अवतार, तुम्हे शत-शत प्रणाम॥ २॥

कौन सलिल प्राणों को थामे ?

—साध्वी श्री मजुलाजी

जग लगे अपने जीवन को,
उन हाथो मे सौप दिया है।
जिन हाथो ने हर लोहे को,
कचन क्या, पारस कर डाला ॥

मछली को मालूम नही है, कौन सलिल प्राणो को थामें,
पर हम तुम तो जान रहे हैं, सागर की उस वत्सलता को।
कूप, सरोवर, सरिता सारे, सागर के ही तो अनुचर है।
चूम रहे है सभी अकारण, एक मीन की निश्छलता को,
अपने मलिन चपल मानस को, उन नयनो को सौप दिया है।
जिन नयनो ने दिया दूर से, दुर्बलता को देश निकाला ॥ १ ॥

कोयल को क्या पता कि, किसने कठो मे माधुर्य भरा है ?
किस वसन्त ने बागो की रानी को पचम स्वर बक्सा है।
वशी को है नाज कि सूखी वगिया को मैंने सरसाया,
पर वशीधर का कौशल ही उसके जीवन का नक्शा है॥
डग-मग करते श्लथ चरणो को, उसी राह मे मोड लिया है।
तोड दिखाया जिसने अपने, पौरुष के मजिल का ताला ॥ २ ॥

विजली को मालूम नही है, कौन मेघ प्रेरक है उसका,
कडक कौधकर क्रीडा-रत शिशुओ को पग पग डरा रही है।
सीपो को क्या पता कि उनको मोती का उपहार मिला क्यो ?
मोती के मद मे छक कर, गोता-खोरो को हरा रही है।
धु धियाए अपने नयनो को उस दीपक पर किया निछावर ।
औरो को आलोक लुटा अपने घर, जिसने तम को पाला ॥

नारी का अभिमान

—साध्वी श्री कमलश्रीजी

नारी ने अपने साहस से स्वय वरा जीवन वरदान ।
उसकी मनन शक्ति ने जीता पुरुषो का भी वृथाभिमान ।।

उसकी कोमलता को जव नर के पौरुष ने ललकारा ।
पर, निष्ठा की अमर मूर्ति कब मानी उसको वह कारा ।।
हर स्थिति को सभाला उसने, युग ही उसका एक प्रमाण ।
नारी ने अपने साहस से स्वय वरा जीवन वरदान ।। १ ।।

उसने अपनी हर इच्छा को कभी न जग को दिखलाया ।
कर्तव्यो पर मरना नर को उसने ही तो सिखलाया ।।
हर पग पर अपने स्वार्थो का करती रहती वह वलिदान ।
नारी ने अपने साहस से स्वय वरा जीवन वरदान ।। २ ।।

कोमल और कठोर तराजू अनुशासन की सफल रीति यह ।
राजनीति से परे सदा वह निभा रही चिर सहज नीति वह ।।
खुद जलकर आलोक दिया है, सफल रहा उसका विज्ञान ।
नारी ने अपने साहस से स्वय वरा जीवन वरदान ।। ३ ।।

रूढि शृ खला टूट पडेगी, जव क्रान्ति मचाएगी वह वढकर ।
सफल स्वय ससार वनेगा शिखर चढेगी जव कुछ पढकर ।।
मानव को शिक्षा का सम्वल होगा उसका स्नेह दान ।
नारी ने अपने साहस से स्वय वरा जीवन वरदान ।। ४ ।।

इन उद्वेलित लहरो पर कभी न नौका होगी विचलित ।
एक नियन्ता उस की गति को सदा रखेगा हाथो रक्षित ।।
वीर नारी को रोक न पाए तिमिर भरे पथ के तूफान ।
नारी ने अपने साहस से स्वय वरा जीवन वरदान ।। ५ ।।

भारत की देवी ! व्य
स्टोर की सेल्समेन,
क्लब की मेम्बर
ऑफिस की क्लर्क व
और
स्कूल की शिक्षिका से
तुम्हारा ऊँचा स्थान है हा
बहुत ऊँचा कर्तव्य है
सुशील गृहीणी का
उज्वल मातृत्व का र
नि स्वार्थ नर्सिग का
भारत भूमि को
धरती का स्वर्ग
बनाने का ।
क्यो भूल रही हो या
समानाधिकार की भुलैया मे
(और)
विश्व के नारी समाज की
स्पर्धा मे
युग का सवाल है क
तुम
सुधारवाद की सरिता से
सीचना चाहती हो र्त
रूखे व्यवहार को
या
प्रेम पूर्ण व्य ?
अपने कर्तव्य को ? ।।

● साध्वी श्री सरोज कुमारीजी

मरघट पर जीवन

—साध्वी श्री कनकप्रभाजी

सुख के लिए सत्य को जिसने, तजने से इन्कार कर दिया।
युग के तूफानो से डरकर, बुझने से इन्कार कर दिया॥

मन की बढी पिपासा तब तब, व्याकुल हो पनघट को त्यागा।
आवरणो से ढका हुआ पौरुष, सूने मरघट पर जागा।
किया समर्पण जिसने अपने प्राणो का भी प्रण के खातिर।
किन्तु टूटने दिया नही था जिसने समझौते का धागा।
जिसने सतवन्ती श्रद्धा का, टूटा मानस सहलाया था।
उसने ही जन जन के मन मे, आस्था का सचार कर दिया॥

झंझावातो से इतराए, सागर मे नौका तैराई।
जिसने पा विश्वास सभी का, युग की मूक व्यथाएं गाई।
जन जन को प्रतिबोध दान कर, मन की थकन उतारी जिसने।
मिटी निराशा की छाया जो, एक बार लाई गहराई।
फूलो से घबराकर-जिसने शूलो का पथ अपनाया था।
उसने घिरी आधियो मे भी, यह सारा ससार तर लिया॥

जिसके गागर ने लाखो प्यासे, प्राणो की प्यास बुझाई।
जिसके मन की सौरभ ने, इस दुनियाँ की बगिया महकाई।
दाह हरी रिसते घावो की, जिसने हाथो से मरहम भरकर।
युग युग बीत गए हैं, फिर भी विश्व दे रहा उसे बधाई।
मेरी पूजा की रोली अब, उसके सिरहाने पहुँचादो।
अपना उजियाला दे जिसने, सब आँखो का तिमिर हर लिया॥

आहो के उस वियावान मे, जिसने गीत खुशी के गाए।
पलको की चोखट मे उसको, हम बन्दी करते ही आए।
एक फरिश्ते की सासो की, लहर लहर से विहस उठे थे।
टूटे अरमानो-सी शमशानी, रातो के काले साए।
जग के दिल की घायल हसरत, को जिसने जी भर सहलाया।
उसने वीरानी राहो मे, एक नया उद्यान कर दिया॥

●

बढ़ते चरण

—साध्वी श्री लज्जावतीजी

बाट देखते थके चरण थे,
मिला न अब भी स्वर्ण सवेरा,
पता नही क्यो भटकाता है,
अनचाहा भी मुझे अंधेरा ।। टेक० ।।

सूना है मानव का मानस,
सूना धरती का है अंचल,
कभी न पकडी गई हाथो में,
आशाओ की लहरे चंचल,
घिरा निराशा का कुहरा जो
जो धुंधलाता है और उजेरा ।। १ ।।
एक हाथ मे डोर लिए तुम
बिखरे घेरे को है बाधा
टूटे और फटे जीवन के
टुकडो को है साधा
खिसक गई पैरो की धरती,
भावो को मूर्च्छा ने घेरा ।। २ ।।
मानवता के मुक्ताओ का
मूल्य कहाँ पाषाणी युग मे
बिखरे रहते धूलि तुल्य जो हर
ठोकर कर मे वे पग पग मे
काले मेघो को तूफानी
तेरे झोखो ने है बिखेरा ।। ३ ।।
शान्तिपुरुष उत्साह तुम्हारा
स्वय बना था युग की शान्ति
निकल गई उलझी जालो मे
आज मनुज की झूठी भ्रान्ति
अमर कहानी ने कण कण में
स्थगित किया है अपना डेरा ।। ४ ।।

●

क्रान्त चेतना

—साध्वी श्री श्रद्धाश्री जी

क्रान्त चेतना से सज्जित है, भिक्षु का स्वर्णिम इतिहास।

निर्भय हो बढते जाते थे घोर अमा की रातो मे।
डिगे नही थे चरण तुम्हारे, भीषण झंझा वातो मे।
तूफानो मे भी जलता था दीप तुम्हारे हाथो मे।
जाने अनजानो ने पाया तुमसे अविरल दिव्य प्रकाश।
क्रान्त चेतना से सज्जित है, भिक्षु का स्वर्णिम इतिहास ॥ १ ॥

फूलो को ठुकरा कर तुम यो शूलो पर ही चले सदा।
अमृत की परवाह नही कर तरल गरल पर पले सदा।
निष्ठा थी जो सत्य विजय की आखिर उसमे फले सदा।
पनघट थे तुम मरूभूमि के हरी अनेको ने आ प्यास।
क्रान्त चेतना से सज्जित है, भिक्षु का स्वर्णिम इतिहास ॥ २ ॥

मानवता की जकडी उन जजीरो को तुमने तोडा।
आत्मसाधना की वेदी पर अपना जीवन लय जोडा।
युगो युगो से सडे जहर का गागर तुमने ही फोडा।
धन्य तुम्हारा साहस, भन्ते हुए अकेले भी न निराश।
क्रान्त चेतना से सज्जित है भिक्षु का स्वर्णिम इतिहास ॥ ३ ॥

क्रान्तिकारी ओ शान्ति पुजारी चरमोत्सव यह खिला तुम्हारा।
आज उसी स्मृति मे देते है "श्रद्धा" सुमन हमारा।
क्यो न तुम्हारे सन्मुख धरा तम से भावुक नभ का तारा।
सदा बढे तेरी राहो पर इन चरणो का गति अभ्यास।
क्रान्त चेतना से सज्जित है भिक्षु का स्वर्णिम इतिहास ॥ ४ ॥

❖❖❖
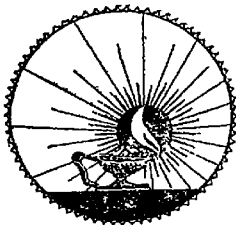
साधना का दीप

—साध्वी श्री ललितप्रभाजी

साधना के दीप मे तुम स्नेह भर दो।
अलसता की तिमिर पटली शीघ्र हरदो।

थी अकेली यामिनि सूने गगन मे,
गोद भरने आ गये तुम कुमुदबाधव!
तिमिर डरकर छिप गया गह्वरो तलों में,
छा गया सब ओर है आलोक यह नव।
डूबती जो नाव उसको बाध दो तुम,
और दे सबल समन्दर घोर तरदो ॥ १ ॥

साधना की वाटिका जब सूखती थी,
मेघ बनकर तुम गगन में सुखद छाए।
ताप सतप्ता मही ने शाति पाई,
(जब) शैल से उन्मुक्त निर्झर उतर आए।
आज इसमे आ रहे अकुर अचानक,
अब इसे तुम शीघ्र पुष्पित फलित करदो ॥ २ ॥

अर्चनाएँ कर रही मैं देव तेरी,
किन्तु क्या उपहार देकर खुश करूँ मैं।
दूध-मुँही बालिका के पास है क्या,
जिसे कर अर्पित शुभाशीर्ष वरूँ मैं।
अर्चना करती विभो! अब इस समय ही,
गा सकूं केवल तुम्हे वह दिव्य स्वर दो ॥ ३ ॥

●

तुम्हारे तट पर

—साध्वी श्री कनकलताजी

वशी तो सुन्दर है मेरी पर उसको सुर नही मिला है ।
रग विरगी इस बगिया मे कुसुम अभी तक नही खिला है ।।

छोटी सी मैं दीपशिखा वन जलू हरू जग का अधियारा,
नही रुकेगा चरण रोकना, चाहे भले तूफानी धारा ।
स्नेहदान तुम से पा अविरल, मेरा जीवन दीप जला है,
वशी तो सुन्दर है मेरी पर उसको सुर नही मिला है ।। १ ।।

नन्ही-सी अधखिली कली मैं चाहती महकाना उपवन को,
वर्षा और हवा आतप से तप्त करू नही अपने मन को ।
लिया विराम तुम्हारे तट पर मन का सपना आज फला है,
वशी तो सुन्दर है मेरी पर उसको सुर नही मिला है ।। २ ।।

तुम निस्सीम शब्द हैं सीमित तुम्हें वताओ कैसे जानू ,
रूप तुम्हारे हैं अनगिन वोलो किन किन को मैं पहचानू ।
तुमने ही वतलाया मुझ को जग मे जीना एक कला है,
वशी तो सुन्दर है मेरी पर उसको सुर नही मिला है ।। ३ ।।

अव डूवती जल लहरी मे जीवन नौका टकराती जो,
तुमने तट पर पहुचाया है वार वार थी अकुलाती जो ।
देव ! तुम्हारे ! साए मे लो मेरा अरमान फला है,
वशी तो सुन्दर है मेरी पर उसको सुर नही मिला है ।। ४ ।।

श्रद्धेय के प्रति

—साध्वी श्री जिनप्रभाजी 'लाडणू'

क्या नाता है इस दुनियाँ का तुमसे जरा बतादो ।
तुमको पाकर हर मानव क्यो झूम झूम जाता है ॥

कितने फूल खिलाते हो तुम, रंग बिरंगे इन हाथो से,
कितने रिसते घावो को सहलाते हो बातो बातो से ।
तन्त्री के तारो को जोडा एक-एक जो बिखर गये है,
तुमसे पा वरदान जगत् के सपने सारे निखर गये हैं ।
क्या जादू है पास तुम्हारे यह तो जरा बतादो ?
एक इशारा ही बस सबको, खीच-खीच लाता है ॥ १ ॥

जाकर जहाँ बरसते तुम पतझर मे भी मधुमास खिलाते,
और सदा गमगीन निशाओ मे तुम ही मृदुहास बिछाते ।
देव तुम्हारी मुस्कानो ने मुरझाये मानस सरसाए,
हर सूने चौराहे पर, आलोकित कितने दीप जलाए ।
जीवन के अरमानो ने पाई है नूतन राह तुम्ही से,
पत्थर भी पानी बन देखो पिघल पिघल जाता है ॥ २ ॥

सिसक रही मानव की आहे तुमने ही उनको सहलाया,
जीवन की हर उलझन का, शुभ समाधान तुम से ही पाया ।
लाखो चरण चले है पीछे जिधर तुम्हारे चरण बढ़े है,
तुमने अपनी श्रम निष्ठा से कितने ये इतिहास गढे है,
सबको जीत लिया है तुमने, अपने कोमल व्यवहारो से,
इसीलिये इन चरणो मे जग घूम-घूम आता है ॥ ३ ॥

चौराहों पर

—साध्वीश्री शीलप्रभाजी

चौराहो पर भटक गये हम, तुमने ही मजिल दिखलाई।
युगो युगो से प्यासे इन, अधरो की तुमने प्यास बुझाई॥

❖❖❖

दुनियाँ की अनगिन राहो से, चरण हमारे थे अनजाने।
अमा तमा की अधियारी मे, डग भर लेते थे मनमाने॥
(तभी) पथ की ओर इशारा करती, दीख पडी तेरी परछाई।
चौराहो पर भटक गये हम, तुमने ही मजिल दिखलाई॥१॥

विना लक्ष्य के मुक्त गगन की, व्यर्थ उडानो से हम हारे।
खेद खिन्न आकुल व्याकुल, सत्रस्त वहुत थे प्राण हमारे॥
तभी तुम्हारा पथ दर्शन पा, जीवन की कलियाँ विकसाई।
चौराहो पर भटक गये हम, तुमने ही मजिल दिखलाई॥२॥

रहो सदा श्रद्धेय हमारे, यही अभिप्सित इन प्राणो को।
और चाहिए क्या जव तुमसा, दीप मिला इन परवानो को॥
वढे चरण निर्भीक सदा ये, जिधर वजे तेरी सहनाई।
चौराहो पर भटक गये हम, तुमने ही मजिल दिखलाई॥३॥

कोई वहिन, जिस पर अत्याचार हो रहा है, स्वय आत्म-हत्या करले तो वह अहिंसा ही है, धर्म ही है।

—आ० श्री० भिक्षु, महात्मा गाधी
(दृष्टान्त महारानी सती धारणी)

युगनायक, तेरे चरणों में !

—साध्वी श्री मंजुबालाजी

जीवन की समतल धरती पर बढा रहे प्राणो का स्पन्दन।
इन कम्पित कदमो की गति को एक तुम्हारा है आलम्बन।।

—❖—

फैली जब मावस की स्याही, तुमने अगणित दीप जलाये।
बिछे जहाँ पर काँटे अनगिन तुमने उन पर फूल खिलाये।
मूर्च्छित श्वासो मे फिर से तुम चेतनता का करते स्पन्दन।
जीवन की समतल धरती पर बढा रहे प्राणो का स्पन्दन ॥१॥

भौतिकता की चकाचौंध मे धु धियाये मन को सहलाया।
उत्पथ मे भटके मानव को तुमने ही सत्पथ दिखलाया।
अणुव्रत का रोगन देकर तुम मिटा रहे हो सबका क्रन्दन।
जीवन की समतल धरती पर बढा रहे प्राणो का स्पन्दन ॥२॥

नई देन देकर युग को तुम जन-जन के सरताज बने हो।
निखरे नूतन उन्मेषो से तुम जग मे अभिताम बने हो।
युग नायक तेरे चरणो मे जन-जन करते है अभिनन्दन।
जीवन की समतल धरती पर बढा रहे प्राणो का स्पन्दन ॥३॥

●

उपसर्गहर स्तोत्र

उवसग्गहर पास, पास वदामि कम्मघण-मुक्क।
विसहर विसनिन्नास, मगल कल्लाण-आवास ॥

विसहर फुलिग मत, कण्ठे धारेइ जो सया मणुओ।
तस्स गह-रोग-मारी-दुट्ठजरा जति उवसाम ॥

चिट्ठउ दूरे मन्तो, तुज्झ पणामोवि बहुफलो होई।
नर-तिरिएसु वि जीवा, पावति न दुक्ख-दोगच्च ॥

तुह सम्मत्ते लद्धे, चितामणि कप्प पायवब्भहिए।
पावति अविग्घेण, जीवा अयरामर ठाण ॥

इअ सथुओ महायस ! भत्ति-भर-निब्भरेण हियएण।
ता देव ! दिज्ज बोहि, भवे-भवे पास जिणचन्द ॥

—श्री भद्रबाहु स्वामी

दीप जलाते

—साध्वी श्री मधुरेखाजी

श्रद्धा से मिल सब दीप जलाते
गौरव गाते हर्ष मनाते

वर्षों से हमने आशा लगाई
आकर तुमने प्यास बुझाई
देख कर सभी के मन सुख पाते
गौरव गाते हर्ष मनाते ॥ १ ॥

दक्षिण घूमकर आप पधारे
जन मानस के तुम ही सहारे
बहती नदी में हर कोई नहाते
गौरव गाते हर्ष मनाते ॥ २ ॥

महिला जगत को मार्ग दिखाया
नारी ने खोया अपना गौरव पाया
देव तुमको पाकर फूले न समाते
गौरव गाते हर्ष मनाते ॥ ३ ॥

अंधियारी रातो मे चाँद बन आये
ज्योति पुञ्ज बनकर जगत मे छाये
श्रद्धा से हम सब शीश झुकाते
गौरव गाते हर्ष मनाते ॥ ४ ॥

तर्ज—तुम मेरी मंजिल तुम मेरी पूजा

जिन्दगी के मोल, जिसने हैं सिखाये !

—श्रीमती पिस्ताबाई बोहरा

है नही उम्मीद ऐसा फिर मिले अवसर हमे,
पर विचारो का कभी टूटे नही ताता।
इसलिए हम बढ चले कधे मिलाकर एक होकर,
जो समय जाता है वह वापस नही आता॥

इस धरा की नारिया देवी बनी या दासिया थी,
पर नही अधिकार अपना पा सकी थी।
भगवान की करुणा हमे समकक्ष लाया आदमी के,
हम वही आधार पाकर बढ रही थी॥

फिर हजारो वर्प मे हम रुढियो से ग्रस्त होकर,
बेबसी से घूट विप की पी रही थी।
आते की यह मूक वाणी सुन श्री आचार्य तुलसी,
प्राण भरदी हममे जो कुछ भी नही थी॥

आज अणुव्रत की पताका को उठाये नारिया भी,
चल रही है आदमी से पग मिलाये।
'पिस्ताबाई' वन्दना का गीत अर्पण कर रही आचार्य श्री को
जिन्दगी का मोल जिसने है सिखाये॥

संयमी-जीवन

—जया छाजेर

तेरे पथ पर चलकर प्रभुवर, तेरा पथ अपनाऊगी।
तुलसी के निर्देशन मे, यह जीवन सफल बनाऊगी॥

❖❖❖

सामायिक, जप-तप जीवन का, लक्ष्य हमेशा बना रहे।
विषय-वासना से उन्मुख हो, धर्म-ध्यान मे सना रहे।
सत्य-अहिसा, ब्रह्मचर्य से, जीवन ज्योति जगाऊगी।
तुलसी के निर्देशन मे, यह जीवन सफल बनाऊगी॥ १॥

धैर्य-धर्म से आगे बढकर, विपदाओ से लोहा लूगी।
अबला नही, सबल नारी हूँ, जग को यह बतला दूगी॥
निर्भय होकर अपने पथ पर, आगे बढती जाऊगी।
तुलसी के निर्देशन मे, यह जीवन सफल बनाऊगी॥ २॥

नही रूढियो के बन्धन से, अपने को आक्रान्त करू।
कथनी-करनी के अन्तर से, नही स्वय को भ्रान्त करू।
आदर्शो की रेखा पर ही, अपना लक्ष्य सजाऊगी।
तुलसी के निर्देशन मे, यह जीवन सफल बनाऊगी॥ ३॥

काम, क्रोध, मद, लोभ, मोह, सब हमे डिगाने आएगे।
नारी-गौरव के आगे, ये नत मस्तक बन जाएगे।
'जया' सयमी-जीवन से हो मोक्ष-मार्ग को पाऊगी।
तुलसी के निर्देशन मे, यह जीवन सफल बनाऊगी॥ ४॥

तर्ज—प्रभु तुम्हारे पावन पथ पर
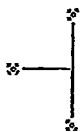
नारी प्रगति की ओर ..

—शान्ता बच्छावत

समय के प्रवाह मे हर वस्तु परिवर्तित हो जाती है। उनके मूल्याकन और मानव के नए रूप बन जाते हैं। सृष्टि के इन नियमो से नारी कैसे वचित रह सकती है। भारत की महान नारियो ने भी अपना प्रथम स्थान पाया है। भगवान मल्लीनाथ जैसे नारी समाज मे भी तीर्थङ्कर हुये। जिन्होने अपने ज्ञान बल से सैकडो राजाओ को, अपन पिता को प्रतिबोध दिया।

नारी समाज को प्रगति की ओर लाने का सौभाग्य आचार्य श्री तुलसी को है। आचार्य श्री आज की नारियो को पुरानी रुढियाँ, पुराना पहनाव, पुरानो को मृतको के पीछे प्रथा रूप से रोना, वह छ छ महीने तक कोहने में बैठना आदि प्रथाये नारी समाज की प्रगती की बाधक हैं। इन कारणो से नारी समाज मे अध्ययन, धर्म का रहस्य, ईर्यासुमति का भी ध्यान नही रहने से, सामायिक, प्रतिक्रमण पौषध आदि का भी उपयोग नही रहता है।

नारी समाज को प्रगति की ओर अग्रसर होना है तो वे अपने आत्मबल की परीक्षा करे तथा अपनी आत्मा की सही रूप मे प्रगती करनी है तो अपने को शिक्षित बनावें। शिक्षित बनने पर धर्म, अधर्म, जीव, अजीव, आदि का ज्ञान प्राप्त होने पर प्रगती की ओर बढ सकती है।

हमे आचार्य श्री पुन पुन प्रगती की ओर बढने के लिये अणुव्रतो को अपनाने के लिये फुरमाते हैं। आचार्य देव' जीवन मे सादगी, सयम, सत्य, मितव्ययता, विनम्रता रखू गी। किसी के प्रति ईर्ष्या, कटुशब्द, अभद्र व्यवहार, अपव्यय व प्रदर्शन नही करु गी किसी के प्रति आक्षेपात्मक आलोचना, किसी को अस्पृश्य या उच्च

नीच नही मानूँगी। इस प्रकार आचार्य देव ! नारी ने (समाज की) प्रगती की ओर बढने के लिये ये प्रेरणाये दी हैं।

पुरुषो की तरह महिलाओ को भी इसी क्षेत्र मे आगे आना होगा। यही आचार्य श्री का शुभ सन्देश समय समय पर नारी समाज को मिला है।

अत नारी समाज का उस श्रद्धास्पद आचार्य श्री तुलसी को हमारा शत-शत वन्दन हो। तथा आचार्य श्री के विशेष आशिर्वाद से नारीया प्रगती की ओर अग्रसर बढे यही हमारी शुभ कामना है।

अपेक्षा, साधु-सस्थाओ से····

(१) राजनीति मे हस्तक्षेप न करें।

(२) परिग्रह से अलिप्त रहे।

(३) जातिवाद, भाषावाद, प्रान्तवाद और राष्ट्रवाद आदि झमेलो मे न फँसें। शान्ति, समन्वय और विश्व की एकता का प्रसार करें।

(४) नवीनता या प्राचीनता का मोह न करें, सदा समीचीनता का समादर करें।

(५) चारित्रिक विकास को ही अपना कार्य-क्षेत्र बनाएँ।

(६) सुशिक्षित, सुव्यवस्थित और अनुशासित हो।

—आचार्य श्री तुलसी

भगवान् महावीर के प्रति

—सरला सेठिया

प्रभुवीर की जयन्ति, सव साथ मिल मनाए।
श्रद्धा विभोर होकर, चरणो मे सिर झुकाए॥

सव ओर वढ रहा है अज्ञान का अधेरा।
कर आत्म साधना हम अव ज्योति सव जलाए॥१॥

विश्वास उठ रहा है अध्यात्म साधना से।
अपने चरित्र वल से विश्वास फिर जमाए॥२॥

मागे क्षमा सभी से सवको क्षमा सदा दे।
मैत्री हृदय मे रखकर वस वैर को मिटाए॥३॥

वाते करे न कोरी कुछ काम कर दिखाए।
इस दिव्य पर्व पर हम अकुर नया उगाए॥४॥

卐

नापुट्ठो वागरे किंचि, पुट्ठो वा नालिय वए।
कोह असच्च कुव्वेज्जा, धारेज्जा पियमप्पिय॥
उ० अ० १ गा० १४

विना पूछे कुछ भी न वोले। पूछने पर असत्य न वोले। क्रोध न करे, आजाए तो उसे विफल कर दे, प्रिय और अप्रिय को धारण करे, उन पर राग और द्वेष न करे।

—भ० महावीर

मंगल गीत

—विमला छाजेर

आज मगल गीत से चारो दिशाएं गूजती हैं।
और जय जय की मधुर ध्वनि मुखर होकर पूछती है॥

आज के जनतन्त्र युग मे कौन वन सम्राट् आया।
या किसी तीर्थेश का यह जन्म उत्सव है मनाया।
राष्ट्र है स्वायत्त फिर सामन्तशाही टूटती है।
आज मंगल गीत से चारो दिशाए गूजती हैं॥ १॥

विश्व मे जन क्रान्तियाँ नव मोड लेकर आज आई।
साम्यवादी सूत्र से अधिकार सत्ता की सफाई।
आज जनता क्या पता किस युगपुरुष को पूजती है!
आज मगल गीत से चारो दिशाए गूजती हैं॥ २॥

विश्व के सम्राट् का अभिषेक होने जा रहा क्या?
विश्व अपनी वासुरी पर गीत अभिनव गा रहा क्या?
व्यक्ति के व्यक्तित्व उत्सव की सुसौरभ फूटती है।
आज मगल गीन से चारो दिशाए गूजती हैं॥ ३॥

●

और वस्तु मैं भेल हुव,
पण दया मे नही हिंमारो भेल।
पूरव ने पश्चिम रो मारग,
किण विधि खावैं मेल॥

—अनुकम्पा ढाल १ गाथा ७१ वी

भावार्थ—और वहुत सी वस्तुएँ परस्पर मिलकर एक हो सकती है पर हिंमा अहिंमा नही मिल सकती। पूरव और पश्चिम के मार्ग परस्पर कैसे मिल सकते हैं?

—आचाय श्री भिक्षु

अणुव्रत महिला परिषद्

—एक परिचय—

अणुव्रत महिला परिषद् की स्थापना ई० सन् १६६६ मे साध्वी श्री सोहनाजी के विशेष प्रयास से हुई। आपके प्रयास से श्रीमती कौशल्या बहनजी इस परिषद् की अध्यक्षा बनी। तथा मुनि श्री बुद्धमलजी स्वामी के चातुर्मास मे (सन् १६६७) परिषद् ने एक स्मारिका निकाली। उस स्मारिका समिति की अध्यक्षा श्रीमती पिस्ताबहन बोहरा ने किया। भारत के उपराष्ट्रपति, तथा साध्वी प्रमुखा श्री लाडाजी, श्री समाजभूषण छोगमलजी चोपडा, आचार्य श्री तुलसी व अन्य भारत के कोने-कोने से सन्देश तार व पत्रो द्वारा प्राप्त हुए। उस स्मारिका मे मुनि श्री बुद्धमलजी (साहित्य-परामर्शक), मुनि श्री मोहनलाल जी (सुजान), शान्ता, जया आदि के भिन्न-भिन्न विषयो पर लेख व कविता प्रकाशित किये गये।

अणुव्रत महिला परिषद् ने सन् १६६८ मे साहित्यनिकाय व्यवस्थापक मुनि श्री चन्दनमलजी के चातुर्मास के बाद मे यहाँ से परिषद् की अपनी तरफ से आचार्य श्री तुलसी की, माह शुद्ध से जेठ महीने तक, लगातार सेवा मे चार-चार बहिनें रही।

अणुव्रत महिला परिषद् ने आचार्य श्री का स्वागत प्रथम बेंगलोर प्रवेश मे भी स्वागत गान द्वारा किया।

परिषद् की बहनो द्वारा हरदम समाज को सहयोग मिलता रहा। बालको तथा बालिकाओ के शिवर मे आचार्य भिक्षु स्वर्गारोहण क्षेत्र सिरीयारी नामक पुस्तिका सबको पारितोषिक मे दी गयी।

आचार्य श्री तुलसी के नेतृत्व मे अखिल भारतीय अणुव्रत महिलाओ का अधिवेशन ता० १५-१६-१७ को बुलाया गया। इसमे १३ ग्रामो की कुल ६५ महिलाओ ने भाग लिया तथा हम बहनो ने श्रद्धा के
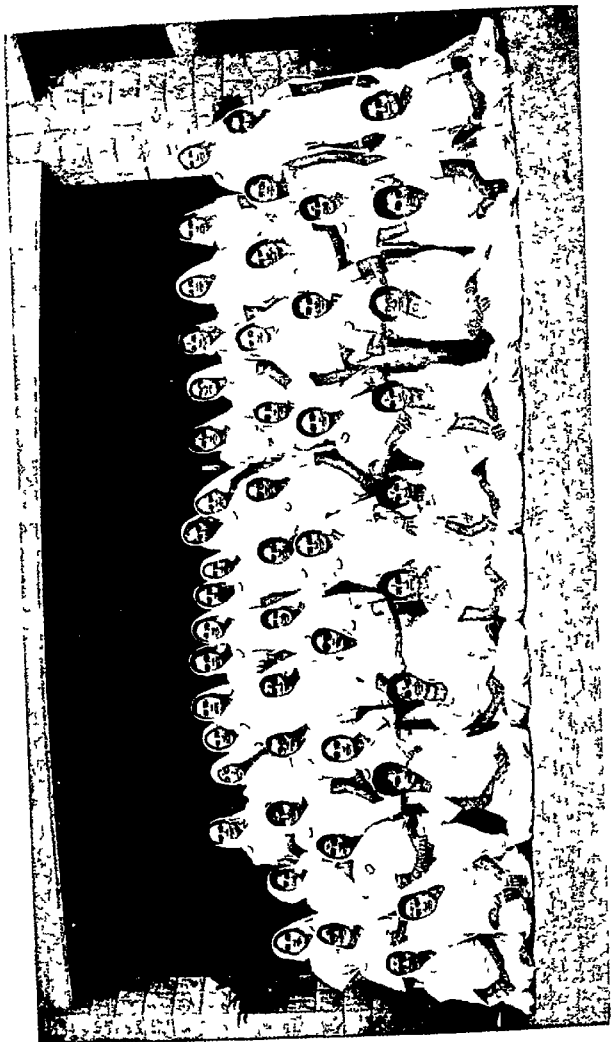
कुसुम आचार्य श्री को भेंट करने के लिए निश्चय किया है। इसमे आचार्य श्री का सन्देश व सन्तो तथा साध्वियो की कविताए प्रकाशित की जा रही हैं।

हमारा अधिवेशन भी आचार्य श्री के नेतृत्व मे शिविर के अन्तिम दिवस के रूप मे मना दिया गया।

अध्यक्षा —श्रीमती पिस्तावहन
मत्री —शान्ता वच्छावत
कोषाध्यक्ष —विमला छाजेर
तथा सदस्याए ४० हैं।

जया छाजेर,
उपाध्यक्षा,
अणुव्रत महिला परिषद्

शान्ति भवन ता० १५-१०-६६
बेंगलोर-२-A

वचन मे मिठास

धीरे-धीरे रे मना, धीरे सब कुछ होय।
माली सीचे सौ घडा ऋतु आयां फल होय॥
वचन वचन सब ही कहे, वचन के हाथ न पाव।
एक वचन औषध करे, एक करै है घाव॥

अर्थात्—मिठावचन 'वशीकरण एक मन्त्र है परिहरू वचन कठोर' से कटु वचन का परिणाम गायब होकर शान्ति के परिणाम जीवन मे आते हैं।

युगावतार आचार्य श्री तुलसी

—रुक्मिणी बहन

"यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत।
अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानाम् सृजाम्यहम्॥"

पाँच हजार वर्षों के पहले यह वाणी भारतवर्ष में प्रचलित थी, उस समय कंस और श्रीकृष्ण के बीच मे लडाई हुई। श्री कृष्ण ने महाभारत में भी अपना बहुत बल प्रगट करके दुर्योधन आदि से सती द्रौपदी को उनके बगल से छुडाया।

उस युग और इस युग की लीला विचित्र है। इस युग मे एक ओर दरिद्रता, दूसरी ओर धनोपार्जन की लालसा। इन दोनों कारणों से विरोधी शक्तियों का बोलबाला है, परन्तु इससे आचार्य श्री तुलसी अणुव्रत के सही मामलों मे मानव को मानव बनाने में सही मार्गदर्शक है।

आप न मंदिर मे घृणा करते, न मस्जिद से, न चर्च और मठ व गिरनार से भी घृणा! विरोध के अकुर को भी नही अपनाते। आप कहते है कि धर्म मंदिर, मस्जिद आदि मे नही है, परन्तु आत्मा को पहचानने मे ही सही धर्म का मार्ग दर्शन है तथा छोटे-छोटे अणुव्रतों को जीवन मे अपनाने से अपनी आत्मा का दर्शन किया जा सकता है। जैसे मुहं देखने के लिये दर्पण देखते है, उसी प्रकार आचार्य श्री तुलसी ने समाज को प्रतिबोध करने के लिये अणुव्रतों की परिभाषा मे जन मानस तक अणुव्रतों की परिभाषा का साराश फैलाया है।

आचार्य श्री ने अपने प्रवचन मे फरमाया कि एक दिन अणुव्रत सिर्फ तेरापंथियों से ही था, परन्तु अणुव्रत यह मेरा नहीं है, भगवान् महावीर प्रभु के फरमाये हुए है। अत. यह मेरा नही, जन मानस व मानव-मानव का घोष है।

आचार्य श्री की यह भावना है कि यह वृक्ष शाखा-प्रशाखाओ से ऊँचा भी है, विस्तृत भी है परन्तु इस वृक्ष के मूल मे रोग है इसलिए इसके पनपने मे अडचन पैदा होती है। परन्तु आचार्य श्री एक ऐसे प्राकृतिक चिकित्सा करने मे लगे हुए हैं जिससे यह वृक्ष सदा सुन्दर (अणुव्रत के माध्यम से) फलता फूलता रहे। यही युग का अहोभाग्य है।

आचार्य प्रवर ने कभी भी किसी भी भाषण मे अपने को सर्वश्रेष्ठ नही बताया है। परन्तु जो उनके आचरण-विचरण से परिचित होता है वह अणुव्रतो को अपने जीवन मे अपनाये बिना कोई भी नही रहता है तथा आचार्य श्री तुलसी बिलकुल सही, आज के सही-सही युगावतार हैं।

"एकण रं दै रे चपेटी, एकण रो दै उपसर्ग मेटी।
एतो राग-द्वेष ना चाला, दशवैकालिक सभाला ॥"

अर्थात्—एक के चपेटा लगाना और दूसरे को प्यार करना, यह राग और द्वेष का कौतूहल है, दशवकालिक सूत्र मे भगवान् महावीर ने ऐसा कहा है।

—आचार्य श्री भिक्षु

महिलाओं की जागृति कैसे हो ?

—पदमा छाजेर

महिलाये अपने आन्तरिक विवेक को जाग्रत करके ही विकास के पथ पर निर्भीकता से बढ सकती है। हर बार पुरुष महिलाओ की प्रगति के उत्थान करने मे वाधक बने रहते है वे चाबी की तरह हमारे को बान्ध रख छोडा है, रुपयो को बान्ध करके तिजोरी के अन्दर जकड करके रखते है, उसी प्रकार हमारा भी वन्धन कर रखा है। परन्तु हम खुद भी अपने-आपका उत्थान भी नही करना चाहती। हम ऐसी परम्पराओ मे फँस चुकी है कि हमारा अध्ययन, हमारा खाना, पीना, रहना, तथा पहनना भी ऐसा हो चुका है कि उससे हमारी धार्मिक-जागृति भी बिलकुल शिथिल हो चुकी है।

हम धर्म करना, सिर्फ रटारटाया, मुँह बान्धना, इर्या समिति का भी ध्यान नही रखना, आदि हमारी कमजोरिया ही हमे पथ से नीचे गिराती है। परम पूज्य आचार्य श्री तुलसी हमे, अपने प्रवचन मे हमेशा शिक्षा फरमाते हैं कि अपनी जाग्रति अपने-आप से ही होती है दूसरो पर पतन का भार लादना अपनी कमजोरी है। हमेशा आचार्य देव उत्थान के लिए फरमाते है कि बहने सादा जीवन जीना सीखें। बहने ही अपने घर को उज्जवल बना सकती है। जैसे भगवान ऋषभ-देव की माता मरुदेवी इस आरे मे सबसे प्रथम मोक्ष को पधारी बाद मे अन्य। मरुदेवी माता की कितनी भावना सरल, हलुकरमी थी उसके कारण हाथी के होदे पर बैठे-बैठे ही मोक्षगामी हो गयी। अत बहनो को उनके सरल भाव से शिक्षा लेनी चाहिए। वे खुद ऐसी बने और अपना जीवन भी उनकी तरह बनाये।

प्राचीन काल मे इस भारत-भूमि पर कितनी होनहार सतियें हुई, सीता, द्रोपदी, अजना, चन्दनबाला, सुभद्रा, कौशल्या, कुन्ती, मदनरेखा, और तारा इत्यादि अनेक सतियाँ इस भारत भूमि पर हुई है। उसी कारण से आज भारत मे धर्म खडा हुआ है। उन सतियो के जीवन से महिलाओ को हिम्मत के साथ अपने जीवन मे जाग्रति करनी है। उनसे हमे यह सीखना है कि हम बाहरी पर्दा को

हटाये या न हटायें (अर्थात् ब्रह्मचर्य अपने जीवन मे) रखे, सादा जीवन बनायें, अणुव्रती बनें, धार्मिक अध्ययन करें, वास्तविक रूढियो को मिटायें, मिथ्यात्व को मिटा सकें सम्यक्त्व को अपना सके, अपने जीवन मे जाग्रति प्राप्त कर सकें। यही नारियो का प्रथम उद्देश्य है।

* ● *

संयम ही जीवन है

—पिस्ता बरलोटा

समाज मे नारी जाति की बहुत बडी आवश्यकता है, परन्तु प्राय. अन्य समाज मे इसको कुछ भी महत्व नही दिया जबकि आचार्य श्री तुलसी हमारे समाज का विकास करने के लिये हरदम प्रयत्नशील रहते हैं। आपने अपने अणुव्रत के यह घोष मे वास्तविकतया नारी समाज को यह आह्वान् किया कि नारी समाज जाग्रत हो नैतिकता की सुर सरिता मे जन जन मन पावन हो। इसी मे सयम मय जीवन हो।

अपने से अपना अनुशासन, अणुव्रत की परिभाषा, वर्ण जाति या सम्प्रदाय से मुक्त धर्म की भाषा को बहनें जीवन मे अपनाये, मधुर भाषी बनें, प्रत्येक बहनें अपने जीवन मे भगवान महावीर के आदर्शों को अपनावे। क्रोध, कषाय, लोभ, का विसर्जन करे।

बहनें अणुव्रतो के छोटे-छोटे नियम अपने जीवन मे अपनायें। यही भगवान प्रभु का सन्देश है। इन सन्देशो को अपने जीवन मे उतारे और सही रूप मे "सयम ही जीवन है"।

नर हो नारी बने नीतिमय जीवन-चर्या सारी,
कथनी-करनी की समानता मे गतिशील चरण हो।
समता, सह- अस्तित्व, समन्वय-नीति सफलता पाए,
शुद्ध साध्य के लिए नियोजित मात्र शुद्ध साधन हो।
प्रामाणिक बनकर ही सकट-सागर तर सकते हैं,
आज अहिंसा-शौर्य-वीर्य सयुत जीवन दर्शन हो।
सयम मय जीवन हो।

यही वास्तविक नियम सयम मय जीवन को प्रगट मे लाने का सही रूप है।

एक दिशा दो

—श्रीमती सारीबाई छाजेर

देव ! हमे वरदान दीजिए !

अपने प्रण पर मर मिटने का एक सबल अभियान दीजिए ।
तुम हो स्वामी हम है सेवक, तुम जो कहते हम सब सुनती ।
तेरे सन्मुख आते ही हम फौरन ही नतमस्तक बनती ।
तेरा दर्शन, तेरा स्पर्शन, तेरा ही अभ्यर्थन कर कर ।
अपने कृत कर्त्तव्यो का बस शुद्धिकरण हो गया समझती ।
लेकिन तुमसे दूर घरो मे, रहने का भी ज्ञान दीजिए ।
देव ! हमे वरदान दीजिए ॥ १ ॥

धर्म हमारा क्रियाकाण्ड है, धर्म हमारा सम्प्रदाय है ।
हम जो करती वही सत्य है, वही तथ्यकारी उपाय है ।
धर्म का सुफल हम खायेगी, धर्म मर्म हम ही पायेगी ।
इसी भावना और कामना मे, उलझे मन वचन काय है ।
सही धर्म क्या, सही मर्म क्या ? इसका भी विज्ञान दीजिए ।
देव ! हमे वरदान दीजिए ॥ २ ॥

भौतिकता का आकर्पण है, व्यक्ति व्यक्ति मे सघर्पण है ।
सामाजिक पारिवारिकता का, आज हो रहा आकर्पण है ।
ज्ञान बहुत है मान बहुत है, दूरी का अनुमान बहुत है ।
किन्तु सात्विक चिन्तन नही है और न स्वय का आचरण है ।
एक दिशा दो, एक वोध दो, और एक आह्वान दीजिए ।
देव ! हमे वरदान दीजिए ॥ ३ ॥